बूँद

बूँद

में

सागर

रचयिता

कवि हृदय सिद्धान्तज्ञ शिविर प्रणेता

श्रमणाचार्य विनम्रसागर

कृति

बूँद–बूँद में सागर

शुभाशीष – प.पूज्य श्रमणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

संकलन–संपादन

बा.ब्र.बहिन साधना एम.ए. संस्कृत, प्राकृत (Ph.d)

संगीता दीदी एम.ए. संस्कृत, (Ph.d)

: संस्करण :

प्रथम – 5000 प्रतियाँ सन् 2006 बून्दी

द्वितीय –5000 प्रतियाँ सन् 2008 देवली

प्रकाशक

1. श्री देवेन्द्र जैन, बीना 07580–223344
2. धर्म प्रभावना समिति, भिण्ड
3. श्री मुकेश जैन, जयपुर 9414555103

© (सर्वाधिकार सुरक्षित)

कम्प्यूटर डिजाइन एवं मुद्रक – मुकेश जैन 9414555103

आर्यन् एजेन्सीज्

मुकेश मेडिकल स्टोर, अजमेरी गेट, केकड़ी (अजमेर–राज.) 01467–220064 (नि.)

पुनः प्रकाशन हेतु ज्ञानदान राशि – 51/–रु.मात्र

दो शब्द

परम पूज्य कविहृदय **श्रमणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज** द्वारा लिखित यह पुस्तक **"बूँद–बूँद में सागर"** दर्शन और चिंतन का एक खूबसूरत संग्रह है। इसमें गुरु महाराज द्वारा रचित छंदों का प्रकाशन किया गया है। पुस्तक में संकलित प्रत्येक छंद की उत्कृष्टता इसी बात से सिद्ध हो जाती है कि उनमें से श्रेष्ठतम का चयन करना अपने आप में एक दुष्कर कार्य है। संकलित छंदों में जीवन की नश्वरता और आत्मा की शाश्वतता का प्रभावी वर्णन किया गया है। कहीं कहीं पर जीवन के प्रति सांसारिक लोगों के लगाव पर उच्च कोटि के व्यंग्य कर मुनि श्री ने पाठकों को उनकी वास्तविकता से रूबरू करवाया है। प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से हर एक छंद गागर में सागर भरने वाली कहावत को चरितार्थ करता है।

पुस्तक में मृत्यु, राग–द्वेष, भोग–विलास, अनुराग, संस्कार, कषाय, क्रोध, माया, मोह, लोभ, संयम, निंदा, मिथ्या दृष्टि, पूजन, गुरु महिमा, धन, धर्म, कर्म, गम, आलस्य, भक्ति, अहंकार, हृदय, श्रद्धा, ज्ञान, कर्त्तव्य, गुण–अवगुण, दुख–दर्द, प्रमाद, तप, ईश्वर, ध्यान आदि अनेक विषयों पर विस्तार से लिखा गया है। ऐसा लेखन कार्य आचार्य श्री विनम्रसागर जी जैसा कोई पहुँचा हुआ संत ही कर सकता है। आचार्य श्री के श्रीमुख से स्वाभाविक रूप से निःसृत हुए इस ज्ञान पुंज को देखकर भी कोई व्यक्ति सप्रयास वैसा नहीं लिख सकता है। यदि इस संग्रह में सम्मिलित छंदों पर टीकाएँ लिखी जाएँ या उनका विस्तार किया जाए तो गद्य और पद्य में अनेक ग्रंथों की रचना की जा सकती है। यह पुस्तक दर्शन और धर्म के क्षेत्र में एक संदर्भ ग्रंथ बन गई है।

लय और ताल के साथ गाए जाने पर प्रत्येक छंद एक अच्छे खासे भजन का रूप ले लेता है और उसे आनन्द के साथ काफी देर तक गाया जा सकता है। भक्तों के अनुग्रह पर कई बार महाराज श्री ने उन्हें धर्म सभाओं में गाकर भी सुनाया है। कई बार प्रवचनों से उपयुक्त प्रसंग आ जाने पर भी महाराज श्री ने उन्हें गाया है। ऐसे अवसरों पर सारी सभा तालियाँ बजा उठती है और लोग झूमने लगते हैं। महाराज से एक–एक छंद और सुनाने का आग्रह करने के लिए भरी सभा को मैंने स्वयं गिड़गिड़ाते हुए देखा है। महाराज श्री तो स्वयं ही अति उदार हृदय संत हैं, आग्रह किए जाने पर छंदों को गाकर सुनाते भी हैं। उनके श्रीमुख से इन छंदों को सुनने का आनन्द ही अलग है। यह पुस्तक साहित्यिक जगत को उनकी अद्भुत देन है।

अंत में पाठकों से यही निवेदन है कि आप पुस्तक का अध्ययन करें, अपने इष्ट मित्रों को पढ़ने के लिए दें और उसे अपने पुस्तकालय में सुरक्षित रखें तथा

थोड़ा सा यत्न करके तुम भी, एक बार गुरु का वंदन कर लो।
पाकर कृपा उस तत्वज्ञानी की, मिथ्यातम का खण्डन कर लो।।
जब भी समय मिले तुमको, मेरे कहने से मुनि दर्शन कर लो।
कुछ और न कर पाओ गर तो, उनके चरणों का चुम्बन कर लो।।

साहित्यकार : हनुमान सिंह गुर्जर
(M.A.,Msc,L.L.B.,Phd, डी.लिट)
तहसीलदार देवली (टोंक-राज.)

हमारी नज़र में गुरुवर.....

"गीत गाना ही हमारी ज़िंदगी, गुनगुनाना ही हमारी ज़िंदगी
आँख से आँसू बहाना छोड़ दो, मुस्कुराना ही हमारी ज़िंदगी"

गीत और संगीत वह कला है जो रोते को हँसा दे, सोते को जगा दे, यहाँ तक कि मुर्दा को भी जिंदा कर दे। वास्तव में गीत और संगीत हमारे जीवन को सरस, सरल, आनन्दमय बनाते हैं एवं जीवन का लक्ष्य निर्मित करते हैं।

ऐसा ही एक गीत जिसे सुनकर जीवन का सत्य सामने झलकने लगता है, जिसे सुनकर श्रोता मंत्र मुग्ध हो जाते हैं, जिसे भारत देश के सभी जैन संत ही नहीं अन्य संत भी सुनते हैं और आनंदित होते हैं। ऐसे गीत-**"जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाए रे ऽऽऽ"** को अपनी कलम से गति देकर श्रमणाचार्य **श्री विनम्र सागर जी महाराज** ने २००० छन्द लिखकर एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया है।

आचार्य श्री सचमुच अलौकिक प्रतिभा के धनी हैं। सरस्वती देवी का भण्डार जैसे उनके लिए खुला हो। महासंयम के साथ सिद्धान्त शास्त्रों में निपुण, तर्क, न्याय, नय, स्याद्वाद, अनेकान्त, आध्यात्मिकता का समुचित ज्ञान एवं स्वयं गीत, ग़जल, कविता, भजन, मुक्तक, शेर आदि बनाना एवं स्वयं ही मधुरकंठ से सुनाकर प्राणीमात्र को मंत्रमुग्ध कर देना संयोग ही नहीं महासंयोग की बात है।

जब साधु संत इस गीत को सुनते हैं तब आचार्य श्री ही नहीं अनेक दिगम्बर संत यही कहते हैं कि ये गीत नहीं, छन्द नहीं, ग्रन्थों की मूल गाथाएँ भी हैं। इसी गीत को अंग्रेजी में हिन्दी की तरह उसी तर्ज पर गाना बड़ा दुरूह कार्य था। लेकिन किसी ने कहा है- Impossible को Possible करते हैं गुरु ओम्" और इसी पंक्ति को चरितार्थ करके पूज्य आचार्य श्री ने आश्चर्य ही नहीं महाश्चर्य दर्शाया है जब English में गाते हैं-

Life is a water drop it vanishes away ऽऽऽ
Usual-unsual-ho-ho, when it happens away ऽऽऽ

जब तक अंग्रेजी के शब्द पढ़ते हैं तब तक उक्त शब्द का अर्थ प्रत्यक्ष होता जाता है और मन कह उठता है कि आचार्य श्री के गुणों का बखान करना वैसे ही असंभव है जैसे समंदर के रत्नों को गिनना।

आचार्य श्री ने एक और महान् दुर्लभ कृति हम सब को देकर समूची संस्कृति पर उपकार किया है। वह कृति है- णमोकार मंत्र एवं उसका महात्म्य English में अपने अर्थ को दर्शाता हुआ यह पहला णमोकार मंत्र है जिसे णमोकार मंत्र की तरह ही गाया जाता है।

This namokar mantra about to distroy all sins.
And first is auspicious in the all auspicious.

को लय बद्ध तरीके से गाना उनकी अलौकिक प्रतिभा का परिचायक है।

हम प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि पूज्य गुरुवर अनवरत अपनी कलम से श्रमण संस्कृति में योगदान करते रहें इनका यह छन्द काव्य एक दिन महाकाव्य बन कर जैन इतिहास में अपना उच्चस्थान प्राप्त करे और गुरुवर अपनी निर्वाध चर्या और ज्ञान-ध्यान से स्व-पर का उपकार करते हुए निर्वाण लक्ष्य की प्राप्ति करें।

इन्हीं पुनीत भावनाओं के साथ पूज्य गुरुवर के श्री चरणों में श्रद्धा पुष्प समर्पित करते हुए सिद्ध भक्ति युत् कोटिशः

नमोऽस्तु
नमोऽस्तु
नमोऽस्तु

: गुरु चरण चंचरिका :
बा. ब्र. साधना एवं संगीता
(एम.ए.(Ph.d) संस्कृत एवं प्राकृत)

रचयिता की कलम से........

काव्य शक्ति की प्राप्ति को ईश्वरीय शक्ति या गुरुओं का आशीष कहना चाहिये। हर व्यक्ति काव्यरस को पसंद करने वाला होता है। काव्य शैली चुम्बकीय व्यक्तित्व का प्रतीक है। गहन चिंतक, छंद विज्ञ और शब्दकोश का भंडारी ही शब्दों को काव्य का रूप दे सकता है। काव्य बहुत बड़ी बात को अल्पशब्दों में कहने की एक विधा है और कहानी एक छोटी सी बात को बड़े रूप में कहने का तरीका है। चाहे संत हो चाहे श्रावक – काव्य बनाने वाला कवि हमेशा अपने समय का सदुपयोग काव्यानंदानुभूति के साथ बहुत ही आसानी से कर सकता है। जीवन में काव्य बनाने की कला हो, काव्य में रुचि हो, छंदों का ज्ञान हो और माधुर्यता युक्त सुरीला कंठ हो और फिर शक्ति प्रदान करने वाला संयम (महाव्रत) हो ये सभी संयोग एक व्यक्ति के व्यक्तित्व में समाहित हो जावें तो ये सौभाग्य के साथ अद्भुत चमत्कार है।

गीत, कविता, ग़ज़ल, रुबाइयाँ, मुक्तक, छंद, शेर, व्यंग आदि ये सभी मनोरंजन के साधन हैं लेकिन परम श्रद्धेय गुरुवर श्री विरागसागर महाराज की परम अनुकंपा से हमें धर्म की हर बात काव्य के माध्यम से कहने की एक नई विधा प्राप्त हुई तथा गीत कविता ग़ज़लादि ये सभी हमारे लिये मनोरंजन के नहीं आत्मरंजन और आत्मानंद के कारण बन गये। काव्यकला के माध्यम से अपनी बात बहुत ही अच्छे और माधुर्य ढंग से दूसरों के सामने रखी जा सकती है। काव्य ही कवि को गाते–गाते आत्मविभोर कर देता है और कभी–कभी गाने वाले और सुनने वाले को रोमांचित करके रोम–रोम पुलकित कर देता है। काव्य रस जीवन को स्वस्थता देते हुए कभी–कभी आत्मानंदानुभूति का संवेदन करा देता है, जो आत्मिक शांति का प्रतीक है।

हमारा काव्य रचना, गीत, ग़ज़ल, छंद, मुक्तक बनाने का ध्येय सिर्फ इतना ही है कि दुनियाँ में सारे लोग विषय भोगों से युक्त, निरर्थक शर्मिंदा करने वाले गीतों को छोड़कर ये धार्मिक काव्य गीत गुनगुनायें और परमात्मा के गुणों में आनंदित होकर अपने मन को निर्मल राग–द्वेष रहित बनावें और इस मानव जीवन में परमात्मा का दर्शन आराधना कर इसे उच्चतम बनाते हुए सफल बनावें। इन कविताओं, ग़ज़लों, भजनों को ऊर्जित करने वाले हमारे परम श्रद्धेय रोम–रोम को पुलकित करने वाले ***गुरुदेव श्री विरागसागर जी महाराज*** ही हैं सभी काव्यों में सारा श्रेय हमारे पूज्य गुरुवर का ही है, सर्वप्रथम ऐसे गुरुवर के दोनों पावन चरणों में त्रयभक्तियुत् श्रद्धा सहित विनम्र नमोऽस्तु–3 करता हूँ।

श्रमणाचार्य विनम्रसागर

गुरु का नाम हो दिल में सभी वरदान मिलते हैं,
भले वीरान गुलशन हो महकते फूल खिलते हैं।
गुरु अंधों की आँखें हैं अपाहिज की गुरु लाठी,
जिसे गुरु का सहारा हो उसी के दीप जलते हैं।

अनूठे व्यक्तित्व के धनी

(प.पू. श्रमणाचार्य श्री विनम्रसागर जी)

बाल्यकाल से ही उच्च प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का भाव प्रदर्शित होता रहा। चार वर्ष की उम्र में ही चालीस तक पहाड़े याद हों, पाँच वर्ष में जोड़–बाकी–गुणा–भाग सभी सीख लिया हो ऐसी प्रतिभा का भविष्य सारी दुनिया को एक दिन खुली आँखों से दिख ही जाता है। आठ वर्ष तक शिक्षक पद पर कार्यरत रहकर सर्विस करते करते स्नातकोत्तर परीक्षा (M.Com.) में Dist. Top करके प्रोफेसर बनना भी लगभग तय कर लिया था। ICSI और C.A. की तैयारी हो चुकी थी लेकिन प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज को पाकर वैराग्य के बीज अंकुरित हो उठे। घर के सभी लोगों के सपने चूर–चूर हो गये लेकिन आचार्य श्री ने अपना सपना साकार करके दिखा दिया।

आचार्य श्री का पूरा खानदान सोनगढ़ परम्परा को मानने वाला होने पर भी आपके ज्ञान ने सर्वोत्तम मार्ग का चयन किया। आपके चाचा बैंक मैनेजर, डॉक्टर, जीजाजी अनुसंधान अधिकारी दिल्ली व मामाजी कलेक्टर व प्रोफेसर थे। भिण्ड जिले में अब तक 50 लोग साधु बन चुके हैं उनमें मुनि श्री ही एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी हैं जो सबसे ज्यादा लौकिक शिक्षा में पारंगत हैं। हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, प्राकृत भाषाओं का ज्ञान तथा ज्योतिष, हस्तरेखा आदि का ज्ञान है। संस्कृत भाषा का श्रेष्ठ ज्ञान होने के साथ शब्द विज्ञान के धनी हैं, जिनका शब्द उच्चारण सुमधुर और सुस्पष्ट है। वाणी में ओशो जैसी ओजस्विता और तर्कणा है, गीत और संगीत जिन्हें God Gift है।

आचार्य श्री का अध्ययन – मुनि श्री ने प.पू. गुरुवर से, धवल जी, जयधवल जी, महाधवल जी, सिद्धांत ग्रंथ, अध्यात्म ग्रंथ, न्याय ग्रंथ, संस्कृत–प्राकृत व्याकरण एवं चरणानुयोग ग्रंथों व प्रथमानुयोग ग्रंथों का अध्ययन बहुत ही गहनता के साथ किया है। वर्तमान में हर प्रश्न का सटीक जवाब देने की क्षमता रखते हैं। मुनि श्री जैसा शब्द विज्ञान एक–दो साधुओं में ही देखने को मिलता है।

काव्यछंद की रचना – काव्य के रसिक आचार्य श्री ने **''जीवन है पानी की बूँद''**, **''गुरु चरणों की धूलि हमें''**, **''कितना प्यारा तेरा दुआरा''**, **''धीरे–धीरे चलो जी मन्दिर''**, **''कर ले आतम ध्यान''**, **''चेतन पिंजरे वाली ना''**, **''मेरा जीवन कोरा कागज''**, **''कल भी तू अकेला था''** एवं कई देशभक्ति के गीतों की तर्ज़ों पर सैंकड़ों धार्मिक गीत लिखकर लाखों लोगों की जुबान पर ही नहीं उनके मन को झूमने के लिए इन्हें गाने को मजबूर कर दिया। सन् 2000 में ये सारे भजन पूरे भारत में गूँजने लगे जिसमें ''जीवन है पानी की बूँद'' ये गीत टेलीविजन पर मुम्बई से एक Lady Singer (खुश्बू जैन) के द्वारा पूरे भारत में प्रेषित हुआ। आज इस तरह के पन्द्रह भजन बन चुके हैं, जिसमें लगभग 2000 छंद लिखे जा चुके है। आगे कितने और लिखे जायेंगे यह भविष्य की गोद में रखा हुआ प्रश्न है। **आ.श्री ने लगभग छंदों में 1000 कविताएँ लिखीं हैं। 500 भजन, 400 ग़ज़लें (उर्दू में), 2000 मुक्तक, 1500 पहेलियाँ, 2000 English Quototions लिखे हैं। दस तरह के भक्तामर स्तोत्र लिखे हैं एवं बीस** स्तोत्रों एवं

तीन ग्रंथों का पद्यानुवाद कर, कई शेर भी लिखे हैं। ये सभी चिंतनों की पराकाष्ठा, विलक्षण काव्य शैली अध्यात्म की उच्चतम संवेदना की अभिव्यक्ति है।

णमोकार महामंत्र – आचार्य श्री ने णमोकार मंत्र व उसकी महिमा को अंग्रेजी में लिखा है, जो णमोकार मंत्र व उसकी महिमा की तरह ही गाया जाता है। वीतराग स्तोत्र एवं कई भजन भी अंग्रेजी में लिखे हैं। **णमोकार मंत्र का अद्भुत उच्चारण करते हैं तो मन स्वयमेव ही एकाग्र होता हुआ असीम शांति महसूस करने लगता है। अंग्रेजी में यह पहला णमोकार मंत्र है, जिसे गाया जाता हो।** आचार्य श्री ने अंग्रेजी में पाँच पुस्तकें भी लिखी हैं जिनके नाम सभी पुस्तकों की साहित्य तालिका में लिखे हुए हैं।

भक्तामर–पूजन व योग शिविर की विशेषता – आचार्य श्री द्वारा भक्तामर शिविर लगाने का ढंग बिल्कुल अलग है, **ऐसा शिविर सिर्फ और सिर्फ आप ही लगाते हैं यह स्वयं की ही प्रखरता की अभिव्यक्ति है।** पूजन शिविर एक मिशाल है ये दोंनो शिविर आज तक अद्वितीय बने हुये हैं, इसका कारण है आचार्य श्री की चुम्बकीय आकर्षक मीठी आवाज एवं तालबद्ध शुद्ध उच्चारण। योग शिविर में मन को एकाग्र करके इच्छित जगह पर प्रयोग करके काबू में करने की कला। अपने ही नहीं दूसरे संघों में आचार्य श्री जैसा शिविर कई साधु भी लगाने लगे हैं जो अत्यन्त प्रभावना का कारण बनते हैं। भक्तामर शिविर में बैठने वाला चाहे बूढ़ा हो, युवा हो या जवान हो सभी को भक्तामर संस्कृत में याद हो जाता है। इसमें जो सच्चा ज्ञान मिलता है उसका वर्णन अनुभूत रूप है, अभिव्यक्त रूप नहीं।

विशेष विशेषताएँ – आगम प्रणीत बात को तहेदिल से स्वीकार करना, किन्हीं पक्षपातियों द्वारा चलाये गये (लगभग 400 वर्ष पूर्व) तेरा पंथ–बीस पंथ के झंझटों से दूर रहना, सभी से समायोजन करके चलना, समताभाव रखते हुए अपना अध्यात्म भाव अखण्डित रखना, हित–मित–प्रिय वचन बोलना, सरलता व सौम्यता की झलक, विनम्रता और विद्वत्ता से युक्त चर्या आगम के अनुकूल चर्चा व चर्या, किसी भी रूढ़िवादिता में अथवा हठाग्रह में नहीं पड़ना आदि।

प्रवचन शैली का आकर्षण, आवाज में मिठास के कारण हर व्यक्ति उनकी वाणी से प्रभावित हो जाता है। कभी भी विरोधाभास या आलोचनात्मक शैली नहीं होती है। आप गीतों को हिंदी, संस्कृत में ही नहीं, अंग्रेजी में भी हिंदी की तरह गाने की क्षमता रखते हैं। आप पुस्तकों को कम, व्यक्ति के व्यक्तित्व को ज्यादा परखते हैं आज तक जितना भी अध्ययन किया है, वो सब अपने दीक्षा गुरु से ही किया है, किसी भी विद्वान् पण्डित से नहीं किया है। इसी विशेषता के कारण पंथवाद का विष आचार्य श्री में दिखाई नहीं देता।

आचार्य श्री द्वारा रचित व संकलित लगभग 35 कृतियाँ जन-जन के समक्ष प्रस्तुत हो चुकी हैं, जिसमें Philosophy of Karma, Moral Science for children Part I, II, III, What is Truth **एवं** What is Life **ये पुस्तकें आज की पीढ़ी के लिये लिखीं हैं कई लोग आचार्य श्री को <u>''भक्तामर वाले बाबा''</u>, कई लोग <u>''जीवन है पानी की बूँद वाले महाराज''</u>, कई लोग <u>''पूजन वाले बाबा''</u> और कई लोग <u>''शिविर वाले महाराज''</u> के नाम से कहने लगे हैं। किसी को अपनत्व मिल जाता है तो वे लोग गुरुवर को अपने महाराज ही कहने लगते हैं। कई कवि लोगों में एक-एक छंद की विशेषता से उनकी प्रसिद्धि हो जाती है एक छंद की विद्या से ही उन्हें जाना जाता है लेकिन <u>आचार्य श्री एक ऐसी उच्चतम विशेष प्रतिभा हैं जो हर छंद पर धार्मिक कविता लिखने की और गाने की योग्यता रखते हैं, ऐसी विशेषता आज विरले ही किसी संत में दिखाई देती है।</u>**

सूरज के प्रकाश की तरह गुरुवर का ज्ञान दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है, मुनि श्री से इसका राज पूछते हैं तो वे एक ही उत्तर देते हैं कि ये सब गुरुवर का आशीष है उनकी भक्ति का ही प्रसाद है। ऐसे विनम्रता के पुंज, कोमल धातु से निर्मित मेरे गुरुदेव जिनकी चर्या, वाणी सौम्यमयी है ऐसे परम पूज्य गुरुदेव के चरणों में त्रयभक्तिपूर्वक विनम्र नमोऽस्तु—3

चरण सेवक
विनम्र पूजन मण्डल
खांदु कॉलोनी, बांसवाड़ा

गुरु चरणों की धूलि हमें

रचयिता

कवि हृदय सिद्धान्तज्ञ शिविर प्रणेता

श्रमणाचार्य विनम्रसागर

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

I bow to all Arihantas.

I bow to all Siddhas.

I bow to all Acharyas.

I bow to all Upadhyayas.

I bow to all Saints in the world

This Namokar Mantra, about to distory all sins.
and first is auspicious in the all auspicious

Shramanacharya Vinamra Sagar

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये
उसकी दुनिया में हो ३ किस्मत खुल जाये

गुरु को दिल में बिठा लिया - चरणों में सर झुका दिया - 2
गुरु ने जलता दिया दिया -SSS
गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं - गुरु गंगाजल सागर हैं - 2
गुरु की मूरत में - हो - 3 भगवान दिखाये रे - SS
गुरु चरणों.............

गुरु ही मेरे विधान हैं - गुरु ही मुझे प्रधान हैं -2
गुरु ही मेरे प्राण हैं -SSS
गुरु धड़कन हैं ज्ञान हैं - गुरुवर ही भगवान हैं - 2
गुरुवर से बढ़कर हो - 3 नहिं कोइ दिखाए रे - SS
गुरु चरणों..................

गुरुओं का सम्मान हो - कलह न नाम निशान हो - 2
सबके दिल प्रभु नाम हो SS
लक्ष्मी वहीं निवास करे - जहाँ धरम का वास अरे - 2
आदर में आकर हो - 3 लक्ष्मी बस जाये रे - SS
गुरु चरणों..................

माँ ने तन को जन्म दिया - गुरु ने मन को जन्म दिया - 2
प्रभु ने आतम जन्म दिया -SSS
माँ से बाहर आँख मिले - गुरु से अंतस् आँख मिले - 2
गुरु ही जीवन को हो - 3 वरदान बनाएँ रे - SS
गुरु चरणों....................

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे
उसकी दुनिया में हो ३ किस्मत खुल जाये रे

दिले भावना होती है - तभी प्रार्थना होती है - 2
यही साधना होती है - ऽऽऽ
आराधन संजीवन है - गुण पाने का गुलशन है - 2
गुण की आराधन - हो - 3 भव पार लगाए रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

मिल जाएँगे नयन यहाँ - खिल जायेंगे हृदय यहाँ - 2
महकेगा ये चमन यहाँ -ऽऽऽ
संत - संत मिल जाते हैं - कई नयन खिल जाते हैं - 2
ये पल यादों के हो - 3 सब याद कराये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

जिन गुरु महिमा न्यारी है - ऋषियों ने उच्चारी है - 2
पापाचार निवारी है -ऽऽऽ
भोग विषय भव क्यारी है - वीतराग फुलवारी है - 2
जो भी जो चाहे हो - 3 उसको अपनाए रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरू बिना कल्याण नहीं - गुरू बिना शुभ ध्यान नहीं - 2
गुरू बिना सम्मान नहीं - ऽऽ
गुरू बिना सत ज्ञान नहीं - गुरू बिना निर्वाण नहीं - 2
गुरु का आशीष हो - 3 हर काम बनाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जा
उसकी दुनिया में हो ३ किस्मत खुल जाये

जितने तुम झुक जाओगे - उतने ही भर जाओगे - 2
तब ही गुण को पाओगे -ऽऽऽ
अहंकार गर लाओगे - गुण अपने खो जाओगे - 2
अपनी क्यूँ आकर हो - 3 तू शक्ति मिटाए रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

जिन गुरु के गुणगाता है - वह गुण को पा जाता है - 2
सारे विघ्न मिटाता है -ऽऽऽ
प्रभु दिल में नहिं पायेगा - वो जीवन व्यर्थ गवाँएगा - 2
प्रभु की भक्ति में हो - 3 वरदान समाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

भक्तामर जो गायेगा - भक्त वही कहलाएगा - 2
अजर अमर पद पायेगा-ऽऽ
गुण से वह भर जायेगा- शिवपुर को वह पायेगा - 2
भक्ति भव्यों को हो - 3 भव पार कराये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

रत्नत्रय की ज्योति जले - कर्मदाह सब दुःख टले - 2
भाव बनें तब भले - भले -ऽऽ
कदम मुक्ति की राह चले - जीवन अपना नहीं छले - 2
मंगल पाने की हो - 3 अब आश जगाओ रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे
उसकी दुनिया में हो ३ किस्मत खुल जाये रे

मंगलमय अरहंत हैं - सिद्ध प्रभु भगवंत हैं - 2
त्यागी मुनि सब संत हैं -ऽऽऽ
उसका ही भव अंत है - जो दिल से निर्ग्रंथ है - 2
दंगल हटाकर हो - 3 मंगल बन जाओ रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

मंगलमय आचार्य हैं - मंगलमय सब जिनवर हैं - 2
मंगलमय ऋषि मुनिवर हैं -ऽऽऽ
मंगलमय जिनवाणी है - मंगल सुखमय प्राणी है - 2
दुनियाँ के जंगल में हो - 3 मंगल पाओ रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

ढाई लोक मनुदीप कहा - जिसमें मानव दुखी महा - 2
प्रभु ने सुखमय ज्ञान कहा -ऽऽ ऽऽ
जिसने दुःख में सुक्ख लहा - उसने पाया ज्ञान अहा - 2
ज्ञानी के चरणों हो -3 में सब मिल जाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

समता में जो रहते हैं - कहते नहिं वो सहते हैं - 2
ज्ञानधार में बहते हैं -ऽऽऽ
रहना हरदम प्रभु के साथ - गुणीं जनों से करि सौगात - 2
धर्मी का वंदन हो - 3 निज धर्म दिलाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये
उसकी दुनिया में हो ३ किस्मत खुल जाये

झुकते हैं विद्वान हैं - जिनमें अच्छी जान है। - 2
झुके नहीं नादान हैं -ऽऽ
अकड़े रहना मान है - मुर्दों की पहिचान है - 2
झुकने से दामन हो - 3 खुद ही भर जाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

किस्मत हो तो रंग है - सद्गुरु का सत्संग है - 2
दिल में नई उमंग है -ऽऽऽ
पावन वही प्रसंग है - जहाँ गुणों की मंग है - 2
मंजिल का रस्ता हो - 3 गुरुवर बतलाएँ रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

पर को पाकर भूले हैं - भूल भूलकर झूले हैं - 2
भूले फिर भी फूले हैं -ऽऽ
स्व-पर भेद विज्ञान नहीं - खुद की है पहिचान नहीं - 2
गुरु के चरणों में हो -2 सब कुछ मिल जाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

प्रभु के दर पे जाओगे - तब ही तुम कुछ पाओगे - 2
जब उसके गुण गाओगे - ऽऽ
दामन गर फैलाओगे - झोली भरकर आओगे - 2
ईश्वर ही जग के हो - 3 सब काम बनाए रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे
उसकी दुनिया में हो ३ किस्मत खुल जाये रे

गुरुओं का सम्मान करो - उनसे चेतन ज्ञान वरो - 2
दिल से तुम बहुमान करो - ऽऽऽ
समय निकल गर जाएगा - फिर पीछे पछताएगा - 2
फूल सा जीवन हो - 3 क्यूँ शूल बनाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

भव सागर को तिरना है - तो संयम ले मरना है - 2
ऐसा गुरु का कहना है -ऽऽऽ
संयम बिना अधूरा है - सारा जीवन घूरा है - 2
संयम ही जीवन हो - 3 को सफल बनाए रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

राम कहो आराम मिले - सुबह नहीं तो शाम मिले - 2
नाम लिया तो हृदय खिले -ऽऽऽ
हर घर में सम्मान मिले - सच्चा तुझे मुकाम मिले - 2
राम का नाम हो - 3 भव पार लगाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

करो प्रार्थना परम यहाँ - मिल जाये तो धर्म यहाँ - 2
धर्म दिलाता मर्म यहाँ -ऽऽ
धर्म विशाल हृदय सम है - मिटते खुद सारे गम हैं - 2
प्रभु का आराधन हो -3 आराध्य बनाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये
उसकी दुनिया में हो ३ किस्मत खुल जाये

धर्म कर्म से रीते हैं - मोही मदिरा पीते हैं - 2
गम ही गम में जीते हैं -ऽऽ
सही धर्म नहिं जाना है - धर्म क्रिया को माना है - 2
अंतस् जाने बिन हो - 3 नहिं धर्म समाए रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

थोड़ा तजकर जाएगा - थोड़ा परभव पाएगा - 2
नियम प्रकृति का यही यहाँ -ऽऽऽ
कुछ - कुछ तजकर जाएगा - कुछ कुछ पर भव पाएगा - 2
सब कुछ तजेगा हो - 3 वो सब कुछ पाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

खुद का अनुसंधान करो - कोई नया विधान करो - 2
खुद ही खुद का ज्ञान वरो -ऽऽऽ
धर्मी का सम्मान करो - धर्मफलों में हर्ष धरो - 2
निंदा - अनुकंपा - हो - 3 निज धर्म बढ़ाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

संत यहाँ मिल जायेंगे - हृदय सभी खिल जायेंगे - 2
फूल गगन वर्षायेंगे -ऽऽ
संत संत मिल जाते हैं - सबके मन हर्षाते हैं- 2
ये पल यादों के हो - 3 सब याद कराये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे
उसकी दुनिया में हो ३ किस्मत खुल जाये रे

जो पसंद भगवान को - उस पर धरना ध्यान को - 2
पायेगा तू ज्ञान को -ऽऽऽ
प्रभु की इच्छा पर तू चल - उसको भूल नहीं इक पल - 2
अर्पण ही दिल में हो - 3 अरमान बनाए रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

संगति बुरी गिराती है - निंदा नीच बनाती है - 2
वृत्ति स्वार्थ मिटाती है -ऽऽऽ
संत समागम सुखकर है - गुणदायी सब दुख हर है - 2
गुण को पाने की हो - 3 अब झलक दिखाओ रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

जब जब गुरु बुलाते हैं - रस्ता नई दिखाते हैं - 2
देकर ज्ञान चलाते हैं -ऽऽ
दिल में अलख जगाते हैं - शंखनाद कर जाते हैं - 2
गुरु ही गुरुता के हो - 3 सब गुर सिखलायें रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

कीचड़ में ज्यों कमल रहे - गीतों में ज्यों गजल रहे - 2
वैसे ही गुरु अमल रहे -ऽऽऽ
जिनकी चादर अम्बर है - जिनका रूप दिगम्बर है - 2
ऐसे गुरुवर ही हो - 3 शिवराह दिखायें रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये
उसकी दुनिया में हो ३ किस्मत खुल जाये

रागी नहीं विरागी हों - सत्यगुणों के पागी हों - 2
दिल से जो वीतरागी हों -ऽऽ
ऐसे गुरु का संग करो - दिल में जिन गुरु अंश वरो - 2
गुरुवर का प्यार हो - 3 इक दीप जलाए रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु बिन रावण नरक गया - गुरु बिन चक्री नरक गया - 2
गुरु बिन प्राणी डूब गया -ऽऽ
गुरु चरणों में जन्नत है - गुरु से माथा उन्नत है - 2
गुरुवर हम सबका हो - 3 भव भ्रमण मिटायें रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरुओं का अभिनंदन हो - चरणों में अभिवंदन हो - 2
देख उन्हें उर नंदन हो -ऽऽऽ
चरणों की रज चंदन हो - गुरु से ही निर्बन्धन हों - 2
गुरु से दिल आँगन हो - 3 गुलशन बन जाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

आओ गुरु को जानें हम - दिल से गुरु की मानें हम - 2
अपनी कभी न तानें हम -ऽऽ
गुरु जब दिल में आते हैं - दिल का दीप जलाते हैं - 2
गुरु का इशारा हो - 3 हर दाग मिटाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे
उसकी दुनिया में हो ३ किस्मत खुल जाये रे

गुरुवर से मिल जाना है – खिल – खिलकर खिल जाना है
हरदम ध्यान लगाना है –ऽऽऽ
गुरु ही भाग्य विधायक हैं – गुरु ज्ञाता हैं, ज्ञायक हैं
गुरुवर की महिमा हो – 3 नहिं शब्द बतायें रे
गुरु चरणों ....

गुरु असीम गुण सागर हैं – गुरु ही ज्ञान दिवाकर हैं – 2
गुरु करुणा की गागर हैं –ऽऽऽ
गुरुवर ही निष्काम हैं – गुरु ही मुक्ति धाम हैं – 2
गुरु ही चंदन सा हो – 3 जीवन महकाएँ रे ऽऽ
गुरु चरणों ....

चरणों में झुकते रहना – सेवा गुरु करते रहना – 2
भाव विनम्र सदा रखना –ऽऽ
ऊपर उठता जाएगा – फूला फलता पाएगा – 2
हँस करके गुरुवर हो – 3 गर हाथ उठायें रे – ऽऽ
गुरु चरणों ....

जिस पर गुरु की नज़र पड़ी – उसकी बिगड़ी सभी बनी – 2
बरसे उसपर घणी मनी –ऽऽ
गुरु चरणों में जन्नत है – गुरु से जीवन उन्नत है – 2
गुरु ही सागर से हो – 3 तट पर ले जाए रे – ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये
उसकी दुनिया में हो ३ किस्मत खुल जाये

गुरु ही सुंदर शिल्पी हैं – कल्पवृक्ष जिन कल्पी हैं – 2
गुरु ही बिना विकल्पी हैं –ऽऽऽ
जहाँ इनायत गुरु की हो – उसके काम सफल सब हों – 2
गुरु के चरणों में हो – 3 दुनियाँ झुक जाए रे – ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु के बिना अधूरा है – माटी जैसा चूरा है – 2
जीवन लगता कूड़ा है –ऽऽ
गुरु ही यत्न कराते हैं – तीनों रत्न दिलाते हैं
गुरु की कृपा से हो – 3 हम मौज उड़ाएँ रे – ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु के लिए तरसते हैं – हर्षित नयन बरसते हैं – 2
उनके हृदय महकते हैं –ऽऽ
गुरु ही शिष्य परखते हैं – गुरु से शिष्य महकते हैं – 2
गुरुवर की पूजा हो – 3 सब रोग मिटाये रे – ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु दिल की झंकार हैं – गुरु मीठी टंकार हैं – 2
गुरु वाणी के तार हैं –ऽऽऽ
गुरु दुनियाँ से पार हैं – गुरु गुण की मीनार हैं – 2
गुरुवर की वाणी हो – 3 गुरुमंत्र कहाये रे – ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे ऽऽ
उसकी दुनियाँ में हो - 3 किस्मत खुल जाये रे - ऽऽ

गुरु चलना सिखलाते हैं - मंजिल हमें दिखाते हैं - 2
जीवन सुधा पिलाते हैं -ऽऽ
गुरु प्रभु से मिलवाते हैं - गुरु ही राज बताते हैं - 2
गुरु की आज्ञा में हो - 3 सब वेद समाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु पर जो विश्वास करें - उनको गुरुवर पार करें - 2
ऐसा सारे वेद कहें -ऽऽ
गुरु श्रद्धा के गीत हैं - गुरु दुखियों के मीत हैं
गुरुवर से बढ़कर हो - 3 नहिं कोइ दिखाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

ज्ञानी देता ज्ञान को - अज्ञानी, अज्ञान को - 2
रखना हरदम ध्यान ये -ऽऽ
जिस पर जो गुण होता है - सेवा में वह देता है - 2
जग में प्रसिद्ध हो - 3 यह बात बतायें रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु साहिल गुरु प्यारे हैं - गुरु ही सही सहारे हैं - 2
गुरु रवि तो हम तारे हैं -ऽऽ
गुरु जीवंत सितारे हैं, मंजिल गुरु हमारे हैं - 2
गुरु की कृपा से हो - 3 हर गम मिट जाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे ऽऽ
उसकी दुनियाँ में हो - 3 किस्मत खुल जाये रे - ऽऽ

गुरु ब्रह्मा गुरु शंकर हैं - गुरु हैं विष्णु हितंकर हैं - 2
गुरुवर ही तीर्थंकर हैं -ऽऽऽ
गुरु धरती सम अम्बर हैं - गुरुवर परम दिगंबर हैं - 2
गुरु से धकड़न में हो - 3 खुशबू भर जाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

चाँद सितारों से बढ़कर - गुरुवर हैं जैसे दिनकर - 2
दें सबको जीवंत सफर - ऽऽ
मंजिल राह दिखाते हैं - गिरता उसे उठाते हैं
गुरु गम सा जीवन हो - 3 गुलजार बनाएँ रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

लेकर मोह भटकता है - आकर यहाँ अटकता है - 2
जीवन उसे खटकता है -ऽऽ
गम की राहें पार करे - तब अपना उद्धार करे - 2
दिल के दर्पण में हो - 3 सब सत्य दिखाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरुवर मेरे दर्पण हैं - सब कुछ उन्हें समर्पण है - 2
गुरुवर दिल में हरक्षण हैं -ऽऽ
गुरु से जीवन मधुवन है - गुरु से खिलता गुलशन है - 2
गुरुवर सूरज हैं हो - 3 अँधियार मिटायें रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

123

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे ऽऽ
उसकी दुनियाँ में हो - 3 किस्मत खुल जाये रे - ऽऽ

जहाँ हृदय सिर झुक जाये - वहीं सभी कुछ पा जाये - 2
झुके बिना नहिं मिल पाये -ऽऽ
गुरु ज्ञानी हम श्रद्धानी - गुरु से मिलती जिनवाणी - 2
गुरु ही भव्यों को हो - 3 शुभ राह दिखायें रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

दिल में ये अरमान करें - हम अच्छे इंसान बनें - 2
भव से नैया पार करें -ऽऽ
गुरु सेवा में भाव धरें - तिरते गुरु का संग करें - 2
गुरुवर खेवटिया हो - 3 नौका पार लगायें रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

पुण्य उदय जब आएगा - संत समागम पायेगा - 2
अनुभव नये बनाएगा - ऽऽ
जब तक साधु न मिल पाये - तब तक जीस्त न खिल पाये - 2
संत ही जग में - हो -3 सच राह दिखाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

कैसे मिले प्रकाश वहाँ - सम्यग्दर्शन नाश जहाँ - 2
जीवन सत्यानाश वहाँ-ऽऽऽ
प्राणी रहे उदास वहाँ - श्रद्धा नहिं विश्वास वहाँ - 2
सच्ची श्रद्धा ही - हो - 3 सबको सत्य दिलाए रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे ऽऽ
उसकी दुनियाँ में हो - 3 किस्मत खुल जाये रे - ऽऽ

संकट में ये प्राण हैं - कोइ न दिखता त्राण है - 2
सभी तरफ विषवाण हैं -ऽऽऽ
प्रभु गुरु ही कल्याण हैं - इनमें ही सद्ज्ञान है - 2
गुरु ही इस जग में - हो - 3 गुणवान दिखाए रे -ऽऽ
गुरु चरणों ....

शरण मिले वह चंगा है - संत धर्म की गंगा है - 2
शरण न तो भिखमंगा है -ऽऽऽ
संत शांत दिल होता है - संत शांति को बोता है - 2
गुरु से धरती पर -हो - 3 खुशबू महकाए रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु नहिं होते धरती पर - उड़ने को नहिं मिलते पर - 2
नहिं हो पाता भेद स्व-पर -ऽऽ
गुरु से प्रीति लगाएगा - दुनियाँ में सब पाएगा - 2
महिमा गुरु गाये - हो - 3 मंजिल पा जाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

मन्दिर हृदय बनाएँगे - उसमें गुरु बुलाएँगे - 2
इक तस्वीर लगायेंगे -ऽऽ
अपना दर्द बताएँगे - सारे दुक्ख गलाएँगे - 2
तब ही गुरुवर का हो - 3 आशिष फल पाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे ऽऽ
उसकी दुनियाँ में हो - 3 किस्मत खुल जाये रे - ऽऽ

संतों से सम्मान मिले - प्रामाणिक सद्ज्ञान मिले - 2
दुनियाँ में यशकीर्ति मिले -ऽऽ
संशय सारे दूर हटें - शांति समाधि हृदय वसे - 2
देवों से पूज्य - हो - 3 गुरुभक्त बताएँ रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु से लगन लगा ले तू - किस्मत को चमका ले तू - 2
राज धर्म का पा ले तू ऽऽ
गुरु उठते इंसान हैं- चलते इक भगवान हैं - 2
गुरु ही कीचड़ में - हो -3 शुभ फूल खिलाएँ रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरुवर का जब प्यार मिले - उसका सब संसार मिटे - 2
उर में गुणमय फूल खिले -ऽऽ
गुरु मंजिल के साधक हैं - आराधन आराधक हैं - 2
गुरु ही जीवन में - हो - 3 दृग ज्योति जलाएँ रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरुवर मुझे पढ़ाओ तुम - ज्ञानी मुझे बनाओ तुम -2
भव से पार लगाओ तुम - ऽऽऽ
बन जायें हम शिष्य सुगम - हो जाएँ सब कर्म खतम - 2
गुरुवर की छाया - हो - 3 भव रोग नशाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे ऽऽ
उसकी दुनियाँ में हो - 3 किस्मत खुल जाये रे - ऽऽ

प्रथम गुरु माँ रक्षक है - गुरु दूसरा शिक्षक है - 2
तीजा सद्गुरु मुनिवर है - ऽऽऽ
तीनों हमें जगाते हैं - गुण से भरे बनाते हैं-2
इनका आदर कर - हो - 3 तो आदर पाये रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

करता संत प्रहार यहाँ - होता उसमें प्यार यहाँ - 2
जीवन का उद्धार यहाँ -ऽऽ
दुष्टों का हो प्यार जिसे - तो समझो तलवार उसे
गुरुवर की मार - हो - 3 उत्थान कराये रे
गुरु चरणों ....

लोहे जितने आते हैं - गुरुवर स्वर्ण बनाते हैं - 2
पारसमणि कहलाते हैं - ऽऽ
दिल सागर से गहरा है - गम पर हरदम पहरा है - 2
गुरु ही जीवन को - हो - 3 ज्योत बनाएँ रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

छूते गुरु के चरण यहाँ - करते आशीष वरण यहाँ - 2
होता गम तब क्षरण यहाँ -ऽऽ
चरण - आचरण लाते हैं - सच्चा मार्ग दिखाते हैं - 2
गुरुवर अंधेपन - हो - 3 को दूर भगायें रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे ऽऽ
उसकी दुनियाँ में हो - 3 किस्मत खुल जाये रे - ऽऽ

गुरु बोलें अतिशयकारी - होता सदा असरकारी - 2
बनता वही चमत्कारी -ऽऽ
अनुभव से गुरु बोले हैं - इसीलिए पट खोले हैं
गुरु ही गुरुता का - हो - 3 सिद्धांत पढ़ाएँ रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरुवर ही ध्रुवतारा है - नभ में खिले सितारा है - 2
गुरु ही रत्न पिटारा है -ऽऽऽ
गुरुवर पास बुलाते हैं - शिवपुर पास दिलाते हैं -
गुरु ही शिष्यों के - हो - 3 गम गमन करायें रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु शिष्यों को साधन हैं - गुरु दिल में आराधन हैं - 2
गुरु जीवन में सावन हैं -ऽऽ
गुरु नभ में उड़ते पक्षी - जिनकी हर चर्या अच्छी
गुरु ही भव्यों का - हो - 3 सौभाग्य जगायें रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरुवर परम विरागी हैं - मोक्ष महल की चाबी हैं - 2
सर्व गुणों के पागी हैं -ऽऽ
गुरुवर ही वरदान हैं - गुरु सच्चे भगवान हैं - 2
गुरु की कृपा ही - हो - 3 हर काम बनाए रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे ऽऽ
उसकी दुनियाँ में हो - 3 किस्मत खुल जाये रे - ऽऽ

गुरु गुलशन के माली हैं - मोक्ष द्वार की ताली हैं - 2
गुरु विषयों से खाली हैं-ऽऽ
गुरु दिल से आकाश हैं - गुरु गुण के आभास हैं - 2
गुरु ही मंजिल का - हो - 3 सच पता बताएँ रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

जिसने धर्म किया सच्चा - उसको मिला ज़िगर अच्छा - 2
उसकी करें प्रभु रक्षा - ऽऽ
नहीं मिला तो पाओ तुम - मिला उसे अपनाओ तुम -2
मंजिल का रस्ता हो - 3 गुरु-धर्म बताएँ रे - ऽऽ
गुरु चरणों ....

पहले पात्र परखते हैं, शिष्य तभी गुरु कहते हैं -2
फिर गुण से भर देते हैं -ऽऽऽ
गुरुवर हैं सबसे भारी, शिष्यों को गुरु उपकारी -2
गुरु ही शिष्यों को हो-3 सद्‌राह लगायें रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु नहिं होते धरती पर, जल जाता ये खुद अम्बर -2
त्राहि त्राहि मचती भू-पर -ऽऽऽ
गुरु ही हमको पाल रहे, अच्छे गुण में ढाल रहे -2
शिष्यों को हल्का हो-3 बस गुरु बनाएँ रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे ऽऽ
उसकी दुनियाँ में हो - 3 किस्मत खुल जाये रे - ऽऽ

गुरु भक्ति दिलशाद है, सबको आशीर्वाद है -2
दिल को यही प्रसाद है -ऽऽऽ
गुरु सेवा के बिन जीना, मन में इक अवसाद है -2
खोटी नजरों की हो-3 गुरु नज़र मिटायें रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु का चिह्न मुकुट पर हो, उसके दिल में ईश्वर हो -2
कर्म उसी के जर-जर हों -ऽऽऽ
विजय जहां में पाता वो, अपना वैभव पाता वो -2
गुरु की महिमा को हो-3 मुख कैसे गाये रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

धरती जिसे बिछौना है, नभ इक छत का कौना है -2
कोमल कर सिरहाना है -ऽऽऽ
नहीं किसी से कुछ लेना, कर्ज न गैरों का देना -2
ऐसे वो मुनिवर हो-3 भव पार कराएँ रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु गुणों का कूप है, दिव्य ज्ञानमय रूप है -2
मंगल परम अनूप है -ऽऽऽ
गुरु गुण की फुलवारी हैं, शिवपुर के व्यापारी हैं -2
गुरु सा दुनियाँ में हो-3 नहिं मुझे दिखाए रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे ऽऽ
उसकी दुनियाँ में हो - 3 किस्मत खुल जाये रे - ऽऽ

गुरु प्रतिमा हो पत्थर पर, करें वंदना नारी-नर -2
सभी जानते हैं अक्सर -ऽऽऽ
चेतनता जो साधु धरे, उसकी महिमा कौन कहे -2
साधु में हमको हो-3 भगवान दिखाए रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

ज्यों सूरज उद्योत करे, त्यों गुरुवर उद्योत करे -2
एक जगत इक दिले करे -ऽऽऽ
रवि संसार दिखाता है, गुरु आनंद जगाता है -2
गुरु ही हर दिल में हो-3 इक दीप जलाएँ रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

मुद्रा ही इतनी प्यारी, लगे सभी को मनहारी -2
परम दिगम्बर सुखकारी -ऽऽऽ
ऐसे गुरु से बात करें, ऐसा लगता फूल झरें -2
गुरु के दो शब्द हो-3 दिल फूल बनाएँ रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

मुनियों का मक्खन सा दिल, जिन्हें सदा चाहे महफिल -2
वंदन उन्हें करे हर दिल -ऽऽऽ
सबका वो उपकार करें, सबसे सम व्यवहार धरें -2
मुनि की हर चर्या हो-3 में शास्त्र दिखाए रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे ऽऽ
उसकी दुनियाँ में हो - 3 किस्मत खुल जाये रे - ऽऽ

गुरु चलते जिन आगम हैं, गुरु ही संत समागम हैं -2
सच्चे मार्ग प्रसाधन हैं -ऽऽऽ
सच में संत सुवास है, देता दृढ़ विश्वास है -2
गुरु के बिन दुनियाँ हो-3 अंधी हो जाये रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

सभी संत में सुंदर हो, जिसका रुप दिगम्बर हो -2
छत और चादर अम्बर हो -ऽऽऽ
दिल से स्वयं स्वयंवर हो, नहीं किसी का भी डर हो -2
ऐसा ही संत हो-3 अपना नजराये रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

खोटी नहीं प्रवृत्ति हो, दुर्वचनों पर चित्त न हो -2
पास परिग्रह वित्त न हो -ऽऽऽ
वे साधु के पद चंदन, जिन्हें करे दुनियाँ वंदन -2
जिनके वचनों में हो-3 आधार दिखाये रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

जिसे गुरु सत्संग मिला, उसका ही दिल खिला खिला -2
सही सोच का ढंग मिला -ऽऽऽ
गुरु ज्योतिर्मय पुंज कहा, बिन गुरु मन ये धुंध अहा -2
गुरु ही जीने की हो-3 हर कला बताएँ रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे ऽऽ
उसकी दुनियाँ में हो - 3 किस्मत खुल जाये रे - ऽऽ

जिन-गुरु का सत्कार जहाँ, लक्ष्मी का आवास वहाँ -2
होता दिले प्रकाश वहाँ -ऽऽऽ
गुरुवर का बहुमान तुम्हें, देगा खुद सम्मान तुम्हें -2
आदर से आदर हो-3 खुद ही मिल जाये रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

महापुरुष का गुणकीर्तन, देता हमको विद्याधन -2
तर्कशक्ति मय नव चिंतन -ऽऽऽ
होता तब ही ज्ञान प्रखर, ऋषियों के ये बोल अमर -2
गुण का अभिवंदन हो-3 अभिनंदन लाये रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

करो गुरु का अभिवंदन, हो जायेगा अभिनंदन -2
समझ खुशी के ये ही क्षण -ऽऽऽ
वंदन सुंदर स्वागत है, अपनी यहाँ हिफाजत है -2
गुरुओं का वंदन हो-3 मननंद कराये रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु का हो आशीष जहाँ, उठ जाता है शीश वहाँ -2
जीने की तरकीब वहाँ -ऽऽऽ
ईश्वर के गुरु दूत हैं, अनुभव से अभिभूत हैं -2
गुरु की अनुकंपा हो-3 भव पार लगाये रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

123

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे ऽऽ
उसकी दुनियाँ में हो - 3 किस्मत खुल जाये रे - ऽऽ

संतापित भी किया अगर, साधू छोड़े नहीं डगर -2
चिंतन करता और प्रखर -ऽऽऽ
चित्त मलिनता नहिं लाये, भेद ज्ञान चिंतन भाये -2
साधू कीचड़ में हो-3 गुल कमल खिलाए रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

दुनियाँ खेल समझना है, खेल खेलकर चलना है -2
सही खिलाड़ी बनना है -ऽऽऽ
जीता वही सिंकदर है, हारा वही छछूँदर है -2
गुरुवर हैं कोच हो-3 सच्चा खेल खिलायें रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

साधु का संयोग मिले, उसका ही उर कमल खिले -2
मिट जाते हैं सभी गिले -ऽऽऽ
बनने लगते नये सिले, हरदम रहे उमंग दिले -2
साधू घर आये हो-3 खुशहाली लाये रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

घर पवित्र हो जाता है, जब पवित्र मन आता है -2
मन दिन भर हर्षाता है - ऽऽ
दिन भर मन गुणगाता है, कई दिनों सुख पाता है-2
गुरु के आते ही हो-3 गुण खुद भर जायें रे - ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

गुरु चरणों की धूल हमें जब मिल जाये रे ऽऽ
उसकी दुनियाँ में हो - 3 किस्मत खुल जाये रे - ऽऽ

चरण जहाँ पड़ जाते हैं, वहीं आचरण आते हैं-2
पुण्यकोश भर जाते हैं - ऽऽ
ऐसी भक्ति लायें हम - गुरु के चरण धुलायें हम-2
गुरु की भक्ति ही हो-3 सब काम बनाए रे - ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

श्रद्धा भाव बनाती है, गुरु दर तक ले जाती है-2
आठे अंग झुकाती है-ऽऽ
झूठी श्रद्धा हो दिल में, तो फिर अहंकार बिल में-2
श्रद्धा की ताकत हो-3 शिवमार्ग दिखाए रे - ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

तुमने यहाँ विवेक रखा, लोग बनेंगे सभी सखा - 2
समझ सभी का स्वाद चखा - ऽऽ
देगा कोई तुझे दगा, फिर भी तुमको लगे सगा - 2
तेरा विवेक हो-3 सद्‌राह दिखाए रे -ऽऽऽ
गुरु चरणों ....

कभी नादान बन जाना कभी तूफान बन जाना,
कभी अरमान बनकर मज़हबी पहिचान बन जाना।
कि तुमसे देवता मिलने को आयेंगे जमीं पर खुद,
बशर्ते नेकदिल सा तू यहाँ इंसान बन जाना।।

123

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

मुनि जिसके घर आते हैं, खुशहाली भर जाते हैं -2
गीत खुशी के गाते हैं -ऽऽऽ
गुरु चरणों में स्वर्ग दिखे, मुक्ति का सद्मार्ग मिले -2
गुरु के दिखते ही हो-3 मन खिल खिल जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

धन वैभव पा फूल रहा, खुद अपने को भूल रहा -2
विषयों में तू झूल रहा -ऽऽऽ
सभी तरफ है धूल अहा, गवाँ रहा तू मूल अहा -2
विषयों की ज्वाला-हो-3 दुख दिले बढ़ाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

दिल को अमृत पिला पिला, दीपक दिल का जला जला -2
खुद को ही तू खिला खिला -ऽऽऽ
गम-गुनाह से करो गिला, पैदा कर तू यही सिला -2
मंज़िल का रस्ता हो-3 खुद ही नजराये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

सुख पाने को रोते हैं, बीज गमों के बोते हैं -2
ऊँचे ख्वाब सजोते हैं -ऽऽऽ
ऊँची भरे उड़ान यहाँ, गिरने का है काम यहाँ -2
कैसे सच्चाई हो-3 की राह दिखाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

मन निश्चल हो जाता है, धर्म समझ में आता है -2
नई राह दिखलाता है -ऽऽऽ
धर्म नहीं गर जीवन में, भटकन ही भटकन भव में -2
धर्मी से घर में हो-3 खुशियाँ भर जायें रे -ऽऽऽ
जीवन ....

अहंकार की बात जहाँ, समझ गधे की जात वहाँ -2
दीप जले वो बात कहाँ -ऽऽऽ
ढेंचूँ गधा बोलता है, हीरो स्वयं समझता है -2
मालुम क्या उसको हो-3 सब नीच बताएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

दिल में अगर समर्पण है, तो दिल तेरा दर्पण है -2
जहाँ सभी कुछ अर्पण है -ऽऽऽ
भोग विषय में रोग भरे- त्याग करे नीरोग भरे -2
प्रभु के अर्चन में हो-3 सब कुछ दिख जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

पुण्य-पाप का सर्जन हो, सभी गुनाह विसर्जन हो -2
जीवन का सच अर्जन हो -ऽऽऽ
संयम की सिंह गर्जन हो, वीर प्रभू का अर्चन हो -2
मन का हो मर्दन हो-3 तो राह दिखाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

मिट्टी में रमने वाले, ओ मिट्टी के रखवाले -2
थोड़े दिन तू इठला ले -ऽऽऽ
पंछी जब उड़ जायेगा, ये पिंजरा ढह जायेगा -2
मृत्यु के हाथों हो-3 सब ही छिन जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

राग-द्वेष की छाया में, मिट्टी की इस काया में -2
दुनियाँ की इस माया में -ऽऽऽ
भूल गया तू आकर सब, क्या करना था तुझको कब -2
उसको गर भूला हो-3 वो तुझे भुलाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जिनके मन काले काले, वे मानव हैं मतवाले -2
उनकी किस्मत में जाले -ऽऽऽ
उनके दिल छाले छाले, बंद रहें उर के ताले -2
मन में उजाला हो-3 नहिं उन्हें दिखाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

रहता जो सोया सोया, आगे वो निश्चित रोया -2
गम इतने दिन क्यूँ ढोया -ऽऽऽ
बीज गमों का क्यों बोया, जीवन व्यर्थ यहाँ खोया -2
गुजरा जो वक्त हो-3 वह लौट न आये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

कितना भी तू इतरा ले, मिट्टी को तू अपना ले -2
ओ पुद्गल के रखवाले -ऽऽऽ
क्यों होते हो मतवाले, बुद्धि पर डाले ताले -2
पर पे इठलाना हो-3 दुर्बुद्धि बढ़ाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जन्म तेरी जिंदगानी है, अंतिम मृत्यु निशानी है -2
जीवन तेरा कहानी है -ऽऽऽ
पर्यय आनी-जानी है, इनमें रमना हानि है -2
मरने से पहले हो-3 प्रभु ध्यान लगाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

पैर दबाएगा बेटा वंश चलाएगा पोता -2
खुद ही सोच रहा लेटा -ऽऽऽ
करता रहता ख्वाब अरे, मिलते इनसे दुक्ख निरे -2
ऐसे ही जीवन हो-3 इंसान बिताए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

हाय बुढापा आयेगा, तेरी कमर झुकाएगा -2
तन में सिकुड़न लायेगा -ऽऽऽ
रह जायेगा सभी धरा, काम आयेगा धर्म तेरा
काया से अपनी हो-3 तुम धर्म बढ़ाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

जो गुरु चरणों में आये, भाग्य उसी का जग जाये -2
दुनियाँ की दौलत पाये -ऽऽऽ
ज्ञान गुरु से मिलता है, दिल फूलों सा खिलता है -2
गुरु के आदर से हो-3 शक्ति मिल जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

गुरु नहिं होते जीवन में, भटके फिरते भव वन में -2
शांति न मिल पाती मन में -ऽऽऽ
गुरु का मिलता प्यार जिसे, मिल जाता उद्धार उसे -2
गुरु के चरणों में हो-3 सुख स्वर्ग दिखाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

करें असंभव को संभव, मिटा रहे जो सारे भव -2
जिनको गाते मानव सब -ऽऽऽ
ऐसे हैं विराग गुरुवर, जिनकी प्रज्ञा परम प्रखर -2
ऐसे गुरुवर को हो-3 हम शीश झुकाएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

बचा रहे सबकी अस्मत, बना रहे अच्छी किस्मत -2
मिटा रहे दिल की नफरत -ऽऽऽ
उन गुरुवर का दीद करें आकर नहीं नदीद बनें -2
वरना जीवन में हो-3 गम बढ़ता जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

गुरु पर श्रद्धा हो सच्ची, उसको बुद्धि मिले अच्छी -2
सोच नहीं उसकी कच्ची -ऽऽऽ
गुरु पर जिसे भरोसा है, उसको किसने कोसा है -2
गुरु हैं जो सबका हो-3 दिल साफ कराएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

खुद को यहाँ भुलाएगा, कब तक दौड़ लगाएगा -2
थक कर तू गिर जाएगा -ऽऽऽ
नहीं लहर वो पानी की, दौड़ न तू मर जाएगा -2
जैसे मृग मरता हो-3 तू भी मर जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

धन को यहाँ बढ़ाता है, दिन भर खूब कमाता है -2
चिंता में दुख पाता है -ऽऽऽ
अपना जिसे बनाता है, संगिनी उसे बताता है -2
मरघट पे तेरे हो-3 वो संग न जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

अर्द्धमृतकसम बूढ़ापन, खाल लटकती दुक्ख सघन -2
पोता-पोती देख मगन -ऽऽऽ
उनमें देख रहा बचपन, देखा करता रोज स्वपन -2
अपना बुढ़ापा हो-3 यूँ रोज बिताए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

खाँस-खाँस कर रोता है कोई साथ न होता है -2
लाठी ले दुख ढोता है -ऽऽऽ
मरा हुआ सा लेटा है साथ न देता बेटा है -2
अब तू रो-रोकर हो-3 क्यों चैन गँवाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

मतलब के सब नर नारी, झूठी ये दुनियादारी -2
सभी जगह हैं दुख भारी -ऽऽऽ
गर्ज रहे तो साथ सभी, कह दें बाप गधे को भी -2
तेरे ही परिजन हो-3 तुझको कफन उड़ाएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

दुनियाँ के इस अरहट, में बीत रहा तू घट-घट में -2
राग द्वेष की खटपट में -ऽऽऽ
बाँध तुझे ले जायेंगे, लोग तेरे ही मरघट में -2
तेरा ही वारिस हो-3 तुझको चिता दिखाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

बुझा हुआ दिल जल जाये, जो भगवन् के गुण गाये -2
अंतस् का तम मिट जाये -ऽऽऽ
प्रभु खुद ही रोशनमय है, अंधकार का नहिं भय है -2
गुण को गाने से हो-3 गुण ही भर जायें रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

बैठा घर के द्वारे पर, लेटा है जो खटिया पर -2
खाँस रहा जो बिस्तर पर -ऽऽऽ
हाय बुढ़ापा इस तन का, घणा दुक्ख इस जीवन का -2
संयम से अपना हो-3 बूढ़ापन जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

ये अंधों की बस्ती है, कैसी इसमें मस्ती है -2
बची न कोई हस्ती है -ऽऽऽ
फँस जाये जब ये कश्ती, मिट जाए सारी मस्ती -2
गम की बस्ती में हो-3 नहिं जश्न मनाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

तूने यहाँ कमाया क्या ?इस दुनियाँ में पाया गया ?-2
दिल से प्रभु को ध्याया क्या ?-ऽऽऽ
क्या लेकर तू जायेगा ! मरकर क्या ले जाएगा ! -2
अपने गुण पाओ हो-3 जो सहज दिखाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

एक अंजलि का जल है तू, दो मुट्ठी की राख है तू -2
भूल गया ये आकर तू -ऽऽऽ
दो दिन का ये मेला है, चला चली का खेला है -2
जाने किस खातिर हो-3 तू पाप कमाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

किस देहरी से आया है, किस देहरी पर जाना है -2
तेरा कोई ठिकाना है ?-ऽऽऽ
बिना ठिया के दुखी जिया, जैस पत्नि, बिना पिया -2
अपने आँगन की हो-3 तुम नींव धराओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

सबको समय नचाता है सब कुछ समय दिखाता है -2
समय बड़ा बलवान है -ऽऽऽ
रावण रामचंद्र सीता, कौन समय से था जीता -2
सारी दुनियाँ को हो-3 ये समय नचाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

समय समझ में आयेगा समयसार जब पायेगा -2
ईश्वर खुद मिल जायेगा -ऽऽऽ
दुनियाँ ने उसको गाया, जिसने समयसार पाया -2
मृत्यु वह जीते हो-3 जो समय को पाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

सारे हैं गमगीन यहाँ, दिल से हैं नमकीन यहाँ -2
कोइ नहीं स्वाधीन यहाँ -ऽऽऽ
गमगीनों पर गम मिलता, तुमको नहीं यकीन यहाँ -2
गम की दुनियाँ में हो-3 क्यूँ गमी बढ़ाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

जिसने दीपक जला लिया, उसने दिल को खिला लिया -2
नया दिवाकर उगा लिया -ऽऽऽ
गुरुवर का बहुमान किया, जिनवर का गुणगान किया -2
जीवन की ज्योति हो-3 तब ही जल पाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

क्रोध मान मद लोभ नहीं, अंतरंग में क्षोभ नहीं -2
कभी भी उसको शोक नहीं -ऽऽऽ
चिंता, चिता बनाती है, जिंदा यहाँ जलाती है -2
चिंतन की धारा हो-3 निज राह दिखाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

करता रहता अरमां तू, चंद दिनों का मेहमां तू -2
यहाँ रहेगा कितना तू -ऽऽऽ
जैसे यहाँ विचार करे, वैसा ही घर द्वार मिले -2
अच्छे में अच्छा हो-3 सब ही मिल जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

मन काला बाहर उजले, कैसे ये जीवन सुधरे -2
बगुला जैसा भेष धरे -ऽऽऽ
अंदर बाहर एक है, कौआ तुमसे नेक है -2
मायाचारी ये हो-3 दुख ही उपजाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

गैरों को मत ताँक यहाँ, अपने अन्दर झाँक यहाँ -2
कोरी तू मत फाँक यहाँ -ऽऽऽ
फाँकेगा-फुक जायेगा, ये जीवन चुक जाएगा -2
खुद में ही देखो हो-3 खुद खुदा दिखाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

भूल गया है जो रोना, उसको कैसा दुख होना ?-2
उसको क्या लेना देना -ऽऽऽ
घोल हँसी का घोल यहाँ, निष्ठ वचन अनमोल यहाँ -2
खुशियाँ वो देता हो-3 जो खुश नजराये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

दृष्टि में नहिं खुशी जिसे, खुशियाँ मिलती कहाँ उसे ?-2
वो गम में ही यहाँ घुटे -ऽऽऽ
नज़रों में ही सुख-दुख है, सुखी है जो अन्तर्मुख है -2
अपना नजरिया हो-3 उत्कृष्ट बनाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

कच्चे फल तरु आते हैं, भारी उसे बनाते हैं -2
लेकिन नहीं झुकाते हैं -ऽऽऽ
जब वे फल पक जाते हैं, पेड़ स्वयं झुक जाते हैं -2
बुद्धि पक जाये हो-3 तो खुद झुक जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

आवश्यकता पेट है, इच्छा मन की पेटी है -2
भोगाकांक्षा बैठी है -ऽऽऽ
पेट यहाँ भर सकता है, पेटी कब भर पाई है -2
दुनियाँ की दौलत हो -3 नहिं पेट भराये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

थामे लोभ का पल्लू जो, समझो इंसां उल्लू वो -2
दुनियाँ में सिलबिल्लू वो -ऽऽऽ
कीचड़ में वह केलि करे, कीड़े जैसा यहाँ मरे -2
कोल्हू का बैल हो-3 कुछ देख न पाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

हँसकर जिसे दिया जाता, हँसकर जिसे लिया जाता -2
पुण्य स्वयं बढ़ता जाता -ऽऽऽ
धर्म उसी का नाम है, खुशियाँ जिसका धाम है -2
देगा वो मिलता हो-3 सब ऋषि बताएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

घर में संस्कार लाना, साधु को घर दिखलाना -2
खुद विनम्रता को पाना -ऽऽऽ
चौका यहाँ लगाओ तुम, मुनि को गृहे बुलाओ तुम -2
मुनि घर में आये हो-3 दारिद्र्य मिटाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

जो अपना खो जाता है, उसको खोजा जाता है -2
खोजा, भोगा जाता है -ऽऽऽ
जिसको भूल गये हों हम, उसको पाया जाता है -2
खोकर खुद भूले हो -3 वो खोज के पाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

हम कहते हैं टन टनभर, मगर सोचते हैं मनभर -2
करते हैं हम बस कणभर -ऽऽऽ
करें अधिक और बोलें कम, यही सीख अपनाएँ हम -2
तब ही जीवन में हो-3 गुल खिलते जायें रे -ऽऽऽ
जीवन ....

हो जाये कब साँझ यहाँ, अपना आँगन माँझ यहाँ -2
बना नहीं मन बाँझ यहाँ -ऽऽऽ
आँखों को तू आँझ अरे त्यागो मन का राग अरे -2
कर ले जो करना हो-3 कल, कल नहिं आये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

ईश्वर का वरदान है, हर इंसां में ज्ञान है -2
ईश्वर तभी महान है -ऽऽऽ
आओ हम इंसान बनें, ईश्वर का सामान बनें -2
तब ही हम प्यारे हो-3 सबके बन पायें रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

गुण ही तारनहारे हैं, अवगुण मारनहारे हैं -2
गुरुवर पालन हारे हैं -ऽऽऽ
देवताओं से ऊँचे हम, गर पा जायें हम संयम -2
अपने अनुभव से हो-3 गुण खुद बढ़ जायें रे -ऽऽऽ
जीवन ....

होगा नहिं आनंद परम, होगा कैसे दिले धरम -2
धिक्कारेगा तुझे करम -ऽऽऽ
सुंदरता तू गुण में ला, सदा विनम्र स्वभाव दिखा -2
तेरे ही दिल में हो-3 ईश्वर दिख जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

यौवन सुंदर रूप मिले, उत्तम कुल सम्पन्न मिले -2
विद्या बिन, नहिं हृदय खिले -ऽऽऽ
गुलशन में ज्यों फूल खिले, पर नहिं उसे सुगंध मिले -2
विद्या बिन जीवन हो-3 बिन बू गुल पाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

कामधेनु सम धर्म यहाँ, दूध समां है कर्म यहाँ -2
घी जैसा है मर्म यहाँ -ऽऽऽ
धर्म-कर्म गर मर्म मिले, ईश्वर का वरदान मिले -2
उसको कहीं भी हो-3 नहिं दुक्ख सताए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

दूध न दे नहिं गर्भ धरे लेकर वो क्या गाय करे -2
क्या उससे है लाभ अरे -ऽऽऽ
विद्या ईश्वर भक्ति न हो, उस सुत से क्या लाभ कहो -2
विद्या बिन मानव हो-3 नहिं इज्ज़त पाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

विद्या बिन इंसान यहाँ, बिल्कुल है बेजान यहाँ -2
कुत्ते की ज्यों पूछ यहाँ -ऽऽऽ
गुप्त अंग ढक सके नहीं, मक्खी भी उड़ सके नहीं -2
विद्याहीनों को हो-3 श्वान की पूँछ बताएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

गुण से रूप निखरता है, शील सदा आचरता है -2
आती ज्ञान प्रखरता है -ऽऽऽ
क्यों धन में तू मरता है, देता ज्ञान निपुणता है -2
गुण की चाहत में -3 गुण मिलते जायें रे -ऽऽऽ
जीवन ....

आयेंगे यमराज जभी, धरे रहेंगे काज सभी -2
कोई न देंगे साथ कभी -ऽऽऽ
खुद को अगर भुलाएगा, यम से मारा जायेगा -2
खुद को जो जाने हो-3 यम नहीं सताए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

इन्द्रिय सुख की चाह रखे, नहीं ज्ञान की आश रखे -2
ऋषियों ने ये वचन कहे -ऽऽऽ
इन्द्रिय सुख में ज्ञान कहाँ, ज्ञानी को हैं भोग कहाँ -2
भोगों की दुनियाँ हो-3 गमगीन दिखाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

धनी-नहीं, धन से होते, नहिं निर्धन, धन बिन होते -2
फिर धन में क्यूँ दम खोते -ऽऽऽ
जिस पर विद्या धन यारो, सबसे बड़ा धनी यारो -2
विद्या बिन सारा हो-3 धन भार बताएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

कितनी भी पुस्तक पढ़ ले, सारे शब्दों को रट ले -2
अच्छे शब्दों को गढ़ ले -ऽऽऽ
दुराचारिणी गर्भ धरे, कहीं नहीं सम्मान वरे -2
गुरु संग की विद्या हो-3 सम्मान दिलाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

रोते हैं माँ बाप तभी, कोई बुझे चिराग, जभी -2
ऐसा होता कभी-कभी -ऽऽऽ
जिस दिन मिटता वंश यहाँ, दिल होता विध्वंस वहाँ -2
ये ही तो लक्षण हो-3 गुरु-मोह बताएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

हार जायें तो रोतीं हैं, थक जाएँ तो सोतीं हैं -2
ऐसी नारी होती हैं -ऽऽऽ
लड़कर जब ये थक जायें, अंतिम धमकी देती हैं -2
मानो वरना मैं हो-3 पीहर चल जाऊँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

होता है परिवार जहाँ, चाहत होती कार वहाँ -2
गम की मारामार वहाँ -ऽऽऽ
ढोता सबका भार अरे, मतलब का सब प्यार अरे -2
मूढी को अपना हो-3 नहिं सार दिखाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

सेवा बिना, नहीं मेवा, कहते हैं जिनवर देवा -2
गुरु ही पार लगा देवा -ऽऽऽ
बड़े सभी से मात-पिता, कर सेवा मिटती चिंता -2
इनको दुख देकर हो-3 सुख कहीं न पाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

हो प्रसन्न हँसता रहता, मीठा मीठा वह कहता -2
कभी न उसको दुख रहता -ऽऽऽ
दुख को हँसकरके सहता, मगन हो अपने में रहता -2
ऐसा इंसां ही हो-3 जीना सिखलाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

संत सभी को मनभावन, कर देते मन को पावन -2
होता पतझड़ में सावन -ऽऽऽ
चरणों की सेवा में मन, खाली, भर जाये दामन -2
गुरु का चरणोदक हो-3 जो शीश लगाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

रोती ज्यादा महिलायें, हँसती ज्यादा महिलायें -2
कम हों पागल महिलाएँ -ऽऽऽ
पुरुष, हँसे-नहिं-रो पाए, पागल हो अटैक आए -2
हँसना और रोना हो-3 सब ठीक बताएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

गुरुवर का दर सच्चा है, गुरु बिन कोइ न अच्छा है -2
गुरु चरणों में रक्षा है -ऽऽऽ
सिद्ध प्रभु सिद्धालय में, गुरु दिल के श्रद्धालय में -2
गुरु बिन ये जीवन हो-3 पतझड़ बन जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

होता नहीं यकीन कहीं, फिर भी तू आसीन यहीं -2
बनो कभी भी दीन नहीं -ऽऽऽ
जो गैरों का दर्द पिये, इंसां वैसा कहीं नहीं -2
फिर भी खुशियों का हो-3 क्यूँ ख्वाब सजाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

123

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

जिसको सच्चा ज्ञान नहीं, वो सच में इंसान नहीं -2
धन से कोई महान् नहीं -ऽऽऽ
बन पाये इंसान नहीं, शिव राहें आसान नहीं -2
अपना ही अनुभव हो-3 सुख शांति दिलाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

झूठे से मन जोड़ेगा, वो सच्चे को छोड़ेगा -2
मज़हब से मुख मोड़ेगा -ऽऽऽ
सत्य समां है मित्र कहाँ, सच जैसा है इत्र कहाँ ?-2
खुद को पहिचाने हो-3 तो सच नज़राये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

मीठा मीठा बोल यहाँ, अमृत दिल में घोल यहाँ -2
जीवन है अनमोल यहाँ -ऽऽऽ
दिल दुखता वो बोल न बोल, घावों पर मरहम से बोल -2
तब ही सद्ज्ञानी हो-3 तू खुद कहलाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

मरने को वो आते हैं, जो नहिं धर्म कमाते हैं -2
इच्छाएँ भर जाते हैं -ऽऽऽ
पर जो अमृत पान करें, सम्यग्दर्शन ज्ञान वरें -2
वे ही इंसान हो-3 विद्वान् बताये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

काँटों में तू फूल खिला, अँधियारे में दीप जला -2
पैदा कर तू दिले कला -ऽऽऽ
कर दे मन की दूर बला, तब हो पाये यहाँ भला -2
गम में जो हँसता हो-3 वो फूल खिलाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

तपता-घिसता-कटता है, और बाद में पिटता है -2
तब ही स्वर्ण निखरता है -ऽऽऽ
वैसे ही हम तपें यहाँ, घिस-पिट-तपकर जियें यहाँ -2
सोने से बढ़कर हो-3 जीवन बन जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

हम मंज़िल से दूर सही, मंज़िल हमसे दूर नहीं -2
गैरों में निज रूह नहीं -ऽऽऽ
हिम्मत हार के बैठे हम, ये कोई दस्तूर नहीं -2
हिकमत दिखलाएँ हो-3 हिम्मत बन जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

उनको खुदा सलामत रख, जो हमसे करते नफरत -2
ऐसी दुआ करें हर वक्त -ऽऽऽ
प्रेम नहीं नफरत करते, कुछ तो वो हमसे करते -2
ऐसी नफरत में हो-3 भी प्यार दिखाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

123

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

हँसते, खाकर चोट यहाँ, हो जाता कम खोट यहाँ -2
प्रभु की उसको ओट यहाँ -ऽऽऽ
हँसना, कला है जीने की, गम, पानी सा पीने की -2
हँसते, तन मन की हो-3 व्याधि मिट जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

किसका होता कौन यहाँ ?बोल है क्यों तू मौन यहाँ ?-2
करता रहता फोन यहाँ -ऽऽऽ
कौन तुझे समझाए ये, अनुभव तू खुद ही कर ले -2
कर ले संवेदन हो-3 तब समझ में आये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जम-जमकर जमते जाना, जमीं जमा करते जाना -2
यही जमाना है जाना -ऽऽऽ
रहो जमाने में आकर, जमना नहीं यहाँ पलभर -2
जमने वाले को हो-3 जमराज बुलाएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

गैरों को गर बाँटोगे, तो तुम खुद को काटोगे -2
कई खोपड़ी चाटोगे -ऽऽऽ
मिलकर सबसे रहो यहाँ, मिले बिना सुख कहो कहाँ ?-2
बाँटे गैरों को हो-3 वो खुद बट जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

कितनी बात अजीब है, प्रभु के वही करीब है -2
जो ही बहुत गरीब है -ऽऽऽ
दूर अमीरों से ईश्वर, पास गरीबों के प्रभुवर -2
जिससे सब पाया हो-3 नहिं उसे भुलाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

रस में भटकेगी रसना, उसको पड़ जाये फँसना -2
निज रस में हँसना हँसना -ऽऽऽ
देखो सच के दर्पण को, करके यहाँ समर्पण को -2
भोगों में फँसता हो-3 वो खुद भुग जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

दुनियाँ इक जंजाल है, तुझे ढूँढ़ता काल है -2
काल बहुत विकराल है -ऽऽऽ
काल जीतना हो तुमको, तो पहले जीतो मन को -2
मन को जीता तो हो-3 सब शीश झुकाएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

बुद्धि विवेक नहीं पाया, तो फिर तुमने क्या पाया ?-2
खुद को गम में उलझाया -ऽऽऽ
जीवन एक गँवा डला, भरकर अँधियारा काला -2
कैसे उजियारा हो-3 हो कौन बताए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

ईश्वर में विश्वास करो, दिल में प्रभु अहसास करो -2
तब मन में उल्लास भरो -ऽऽऽ
दिल में भगवन् दिखे नहीं, उसका भव वन मिटे नहीं -2
खुद में खुद देखो हो-3 रब ही नजराये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

चारों गति का चक्कर है, इसमें कहीं न शक्कर है -2
घूम रहा घनचक्कर है -ऽऽऽ
पर से पर की टक्कर है, सुख का कहीं न मंजर है -2
अपने में झाँको हो-3 सच्चा सफर दिखाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

ज्ञान गुलाल उड़ाएँ रंग, होली खेलें मुनि के संग -2
ऐसा यहाँ बनाएँ ढंग -ऽऽऽ
करके दिल में धरम करम, पाप कर्म कर करें दहन -2
होली पर अपना हो-3 दीपक जल जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

होली पर हो दीवाली, ज्ञान रंग भर पिचकारी -2
जीवन में है हितकारी -ऽऽऽ
होली पर गर ज्ञान उड़े, तो फिर घर-घर दीप जले -2
दीपों के जलते हो-3 उजियारा आये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

तन रोगों की खान है, नहिं माने अंजान है -2
तन सेवे नादान है -ऽऽऽ
तन को जो भी सहलाये, बुद्धिमान नहिं कहलाए -2
नर तन को पाकर हो-3 तप खूब कराओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

नज़र ज़िगर बन जायेगी, ज़िगर नज़र बन जायेगा -2
सच खुद ही मिल जायेगा -ऽऽऽ
फ़िकर नज़र बनवाएगी, सही जिकर करवाएगी -2
दिल की नज़रों से हो-3 रब खुद नजराए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

अच्छे रहें विचार जहाँ, होता शुभ आचार वहाँ -2
बिन विचार आचार कहाँ -ऽऽऽ
जैसी गति हो मति वैसी, जैसी मति हो गति वैसी -2
गतियाँ बन जातीं-हो-3 जैसी मति बन जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

सच में हीरे पाता वो, दिल का दीप जलाता वो -2
दिल से प्रभु गुण गाता जो -ऽऽऽ
गाने से वो पायेगा, जो भी मन में भायेगा -2
प्रभु का आराधन हो-3 हर काम बनाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती हुई हवा कब रुक जाये रे ऽऽ
आँधी तूफां में हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

माँगेगा वो हिसाब जब, तुम क्या दोगे जवाब तब ?-2
देगा तुम्हें सबक तब रब -ऽऽऽ
ऐंठ निकल जायेगी सब, याद आयेगा तब यारब -2
उसका इक झापड़ हो-3 तू झेल न पाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

दिन भर दिखता दाम तुझे, याद न आता राम तुझे -2
वो नहिं दे आराम तुझे -ऽऽऽ
याद, विवाद मिटाता है, दिल, दिलशाद बनाता है -2
प्रभु की यादों में हो-3 हम सब गुण पायें रे -ऽऽऽ
जीवन ....

मर जाओ, मर जाएगा, जी जाओ, जी जायेगा -2
ऋषि कहें, हो जायेगा -ऽऽऽ
आशीविष का काम यही, गुरुवर पर श्रद्धान यही -2
जैसा वो कह दे हो-3 वैसा हो जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

संत धरा पर आते हैं, सुन्दर फूल खिलाते हैं -2
बगिया को महकाते हैं -ऽऽऽ
शांति सुधा बर्षाते हैं, खुशियाँ घर घर लाते हैं -2
संतों से घर का हो-3 आँगन महकाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

क्षणभंगुर जग माया है, नश्वर अपनी काया है -2
क्यूँ इस पर ललचाया है-ऽऽऽ
इसमें सुख-दुख छाया है, तृण से इसे बनाया है-2
इसमें ध्रुव पा ले हो-3 यह समझ कहाये रे - ऽऽ
जीवन ....

धर्म-कर्म से दूर रहा, पापों में मगरूर रहा-2
क्रोध मान में चूर रहा-ऽऽऽ
रहा मेरा मन मनमौजी, हित की बात नहीं सोची-2
मिट्टी का तन ये हो-3 क्षण में गल जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

मकां खड़े रह जायेंगे, कोइ न साथ निभाएँगे-2
सिर्फ कर्म रह जायेंगे- ऽऽऽ
किसको अपना मान रहा, खुद को नहिं पहिचान रहा-2
पंछी तू अपने हो-3 क्यूँ पंख कटाये रे - ऽऽ
जीवन ....

तू ऊँचा उड़ सकता है, आसमान छू सकता है -2
हर सीढ़ी चढ़ सकता है -ऽऽ
जरा यहाँ अरमान करो, हिम्मत से तुम काम करो-2
जीतेगा वो जो हो-3 हिम्मत दिखलाए रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

क्या कर लेगी रामकली जब आयेगा काल बली-2
अन्तिम होगी चला चली-ऽऽऽ
मिल जायेगी राह भली, खिल खिल जाये हृदयकली-2
तब ही जीवन में हो-3 सद्राह दिखाये रे ऽऽ
जीवन ....

नटखट नट बन रहता है, खट पट दिनभर करता है-2
घट-घट घर में मरता है - ऽऽऽ
झटपट कर ले धर्म अरे, पा ले तट का मर्म अरे - 2
वरना जग माया हो-3 तुझको चट जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

इक दिन सभी छोड़ना है, रिश्ते सभी तोड़ना है - 2
खुद को स्वयं मोड़ना है - ऽऽ
पर को तू पर जान अरे, खुद में कर विश्राम अरे-2
दिल की ये धड़कन हो-3 कब थम सी जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

कंधों पर ले जायेंगे, मरघट तक सब जायेंगे - 2
तेरा कफन हटायेंगे - ऽऽ
धू-धू करके देह जले, भला - बुरे का भाव चले-2
मिट्टी की काया हो-3 मिट्टी बन जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

दया-दान की शरण करो, इन्द्रिय विष को दमन करो -2
जिन- गुरु को तुम नमन करो - ऽऽ
गुरु चरणों की शरण करो, मुक्ति रमा को वरन करो-2
वरना ये नैया हो-3 अब पार न जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

किस-किसको तू याद करे, किससे यहाँ विवाद करे-2
जीवन क्यों बरबाद करे - ऽऽऽ
मन में यहाँ विषाद करे, दिल को क्यूँ नाशाद करे-2
दो पल का रहना हो-3 गम क्यूँ उपजाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

क्या सोना क्या चाँदी है, क्यूँ तू इसका आदी है -2
इसमें तो बरबादी है -ऽऽ
धन्धे सारे फंदे हैं, रमने वाले अंधे हैं -2
चिंता पैदा कर हो-3 क्यूँ दुःख बढ़ाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

भीतर कितना सुन्दर है, बाहर से क्यूँ बंदर है - 2
ईश्वर तेरे अन्दर है - ऽऽ
तू ही यहाँ सिकन्दर है, सही राह का मंजर है-2
अपनी क्यूँ दौलत हो-3 निज हाथ मिटाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

मतलब के सब यार यहाँ, झूठ सब व्यापार यहाँ - 2
दिखा न सच्चा प्यार यहाँ - ऽऽ
रिश्तों में सब रिसते हैं, अज्ञानी बन पिसते हैं-2
खुद को पाने की हो-3 अब अर्ज लगाओ रे - ऽऽऽ
जीवन ....

बड़े - बड़े हों जब धन्धे, भाव तभी ज्यादा गंदे - 2
आँखें होते भी अंधे -ऽऽ
रोटी दो ही खाओगे, ज्यादा क्या कर पाओगे ? - 2
तेरा ये पाप हो-3 बस तुझे भ्रमाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

कंदमूल आयोजन का, त्याग करो निश भोजन का-2
मन हो निर्मल जल जैसा - ऽऽ
मद्य-माँस-मधु मधुर नहीं, जीव दया सम धर्म नहीं-2
भगवन् का दर्शन हो-3 पल में फल जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

कई साफ करते नाली, धोते बर्तन कोइ थाली - 2
कोई बाग के हैं माली - ऽऽ
रहे धर्म से हैं खाली, मन की परिणति है काली-2
कर्मों की ताकत हो-3 क्या खेल दिखाए रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

कोई हमें रुलाता है, कोई हमें फँसाता है - 2
कोई हमें हँसाता है -ऽऽ
सभी नज़ारे मिलते हैं, कर्म यहाँ जब चलते हैं-2
कर्मों के फल से हो-3 कब कौन बचाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

प्रभु की मन में है माला, उनका प्रभु है रखवाला - 2
नहीं रहे फिर मन काला - ऽऽ
माला शील बनाती है, जग के मील चलाती है-2
मालिक की माला हो-3 सब माल दिलाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

माला से प्रभु खास बने, मज़हब पर विश्वास बने-2
मुक्ति महल का पास बने -ऽऽ
माला में सब माल छिपा, मालिक का सब हाल छिपा-2
मन से माला तो हो-3 मालिक मिल जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

पर में हो आसक्ति जहाँ, मिटती अपनी शक्ति वहाँ - 2
मिले न कोई युक्ति वहाँ - ऽऽ
मुक्ति न दुख से मिल पाए, सुख की कली न खिल पाए-2
ऐसा भवि प्राणी हो-3 घर त्याग न पाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

माया कितनी प्यारी है, तू खुद बना पुजारी है - 2
क्यूँ ऐसी लाचारी है - ऽऽ
मज़हब से तू प्यार करे, हो जाये भव पार अरे - 2
तेरा ही अनुभव हो-3 तुझको राह दिखाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

राग-द्वेष में धँसा हुआ, मोह जाल में फँसा हुआ-2
विषय भोग में रचा हुआ - ऽऽ
जीता है ज्यों मरा हुआ, रहता है ज्यों डरा हुआ-2
गम में यूँ जीकर हो-3 गम और बढ़ाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

गम को ढोते यहाँ जिया - रोते रोते जन्म लिया-2
चीख चीखकर मरण किया - ऽऽ
रिश्ते कई बनाये हैं - काम न कोई आये हैं-2
मातम सा जीवन हो-3 मायूस बनाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

हरदम तू धन जोड़ रहा - पुद्‌गल में सर फोड़ रहा - 2
खुद अपना दिल तोड़ रहा - ऽऽ
धन है किसका सगा अरे - धन ही देता दगा अरे-2
धन की चाहत में हो-3 दुख दर्द बढ़ाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

जब हो जाये मन काला, काम न आये तब माला -2
निर्मित हो जग जंजाला - ऽऽ
आयेगा जब काल तेरा, पड़ा रहे सब माल तेरा-2
दिल से मन जानो हो-3 सब समझ में आये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

पाप कर्म जो करते हैं, वो जल्दी ही मरते है - 2
कभी नहीं वो तिरते हैं - ऽऽ
डूबे और डुबाते हैं, दुर्गति में दुख पाते हैं-2
ऐसों की संगति हो-3 दुख ही उपजाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जिन गुरु के गुण गाते हैं, मौत अकाल मिटाते हैं - 2
जीवन में सुख पाते हैं - ऽऽ
पुण्य इष्ट दिलवाता है, अच्छे घर ले जाता है - 2
पुण्य से प्राणी हो-3 भगवन् बन जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

प्रभु गुण से सब मिल जाता, हृदय कमल सा खिल जाता - 2
दिल का दीपक जल जाता - ऽऽ
गुरु गुण से सम्मान मिले, सच्चा सच्चा ज्ञान मिले - 2
धर्मी पापी को हो-3 भव पार लगाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

जिसका होता दिल छोटा, करता कर्म वही खोटा - 2
लाभ न हो, होता टोटा - ऽऽ
सागर सा दिल लेकर भी, दिल का भरे नहीं लोटा - 2
किस्मत ही सबको हो-3 सब खेल दिखाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

पूजन व्रत उपवास करे, पर कोई उपहास करे - 2
कोई ज्ञान विनाश करे - ऽऽ
खुद का नहिं अहसास करे, वो प्रभु का नहिं खास अरे - 2
प्रभु को पाना तो हो-3 निज ज्ञान बढ़ाओ रे - ऽऽऽ
जीवन ....

करें दिखावा बढ़ चढ़के, रहते हैं जो लड़-लड़के-2
ऐसे होते हैं लड़के - ऽऽ
हिल मिल करके रहो यहाँ, पलभर के मेहमान यहाँ - 2
झगड़े हों घर में हो-3 तो नर्क कहाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

कैसी कैसी बेला है, चारों ओर झमेला है - 2
अजनबियों का मेला है - ऽऽ
खुशी गमों का खेला है, रहना तुझे अकेला है - 2
कब तक दुनिया में हो-3 तू जान गँवाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

123

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

जीवन बहता पानी है, एक पड़ाव जवानी है - 2
इसमें जात दिखानी है - ऽऽ
भूल करे तो हानि है, खुद में अमर कहानी है - 2
पल में ही क्या से हो-3 क्या क्या हो जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

भक्ति में हो अवगाहन, तब हो गुरु का पड़गाहन - 2
खिल जाता दिल का आँगन - ऽऽ
देकरके आहार यहाँ, धन्य समझते हाथ यहाँ - 2
उस दिन खुशियों से हो-3 घर महका जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

औषधि दान जो दिल लाया, वह निरोग पाता काया - 2
फल औषधि का बतलाया - ऽऽ
बहुत पुण्य से मिलता है, सेवा से मन खिलता है - 2
अवसर मिल जाये हो-3 तो नहीं गँवाओ रे - ऽऽऽ
जीवन ....

करता है तू मनमानी - बनकरके यूँ अभिमानी - 2
पढ़े नहीं तू जिनवाणी - ऽऽ
खाक ज़िंदगी भर छानी, बना कभी नहिं तू ज्ञानी - 2
उसका बुलावा हो-3 कब घर आ जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

दौलत आनी जानी है, क्यूँ इस पर अभिमानी है - 2
दो पल की ज़िंदगानी है - ऽऽ
पलभर में उड़ जायेगा, सभी पड़ा रह जायेगा।
मन की आशायें हो-3 मन भर न पायें रे - ऽऽ
जीवन ....

बैर विरोध मिटाता है, क्षमा धर्म कहलाता है - 2
प्रेम का दीप जलाता है - ऽऽ
मैत्री भाव बढ़ाता है, शिवपुर राह दिखाता है - 2
होता मन निर्मल हो-3 तब धर्म सुहाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

ख्वाबों में अरमानों में, गतियों के मेहमानों में - 2
मन व्यापार मकानों में - ऽऽ
अपनायी रिश्तेदारी, मतलब की दुनियादारी - 2
खोया ये जीवन हो-3 खोता ही जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

आँखों के मिच जाने पर, साँसों के रुक जाने पर - 2
कालबली के आने पर - ऽऽ
होगी अपनी चलाचली, मुरझायेगी हृदय कली - 2
उन पल में तुमको हो-3 बस याद वो आये रे - ऽऽ
जीवन ....

123

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

पुण्य - पाप जग माया है, सुख-दुख इसकी काया है -3
स्वर्ग - नर्क तो छाया है - ऽऽ
इसने धर्म भुलाया है, सबको यहाँ भ्रमाया है - 2
माया में फँसकर हो-3 क्यूँ भ्रम उपजाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

पर को अपना मान रहा, पर अपना नहिं जान रहा - 2
कोरा ज्ञान बखान रहा - ऽऽ
पाप की जो करता पुष्टि, जानो वो मिथ्यादृष्टि-2
ऐसा गुमराही हो-3 गुमराह कराये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

अपना - अपना माना है, पर को पर ही जाना है - 2
पाता वो प्रभु बाना है - ऽऽ
भेदज्ञान विज्ञान है, इससे ही शिवधाम है - 2
ऐसा सद्राही हो-3 शिवराह दिखाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

किस्मत में हो जब भूसा, मन तब हो रूखा रूखा - 2
जीवन हो सूखा सूखा - ऽऽऽ
कोइ न तब सम्मान करे, संकट में हों प्राण अरे - 2
तुमको तब भगवन् हो-3 भी याद न आये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

भूला प्रभु का आराधन, जोड़े इन्द्रिय सुख साधन -2
क्षणिक सुखों में पागल मन - ऽऽ
लाल तुझे नहिं नजराया, भ्रम में ही तू भरमाया - 2
फूलों की बगिया हो-3 इक दिन मुरझाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

अपने गुण से प्यार करो, आतम का श्रृंगार करो - 2
खुद में नया विचार करो - ऽऽ
तुमको धर्म उठायेगा, सच्चा मर्म दिखाएगा - 2
धर्मी को दिल में हो-3 सब कुछ दिख जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

तन इक दिन जल जायेगा, मिट्टी में मिल जायेगा - 2
कर्म साथ में जायेगा - ऽऽ
संस्कार संग जायेंगे, भावी क्रिया करायेंगे-2
भावों की बगिया हो-3 तू कब महकाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

सिर पर सेहरा लगवाया, घिसकर चेहरा चमकाया - 2
तन खुशबू से महकाया - ऽऽ
तन मिट्टी बन जायेगा, जब तू मरघट जायेगा - 2
तन मन की करनी हो-3 तेरे संग जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

सोया भाग्य जगाना है, संस्कार शुभ लाना है -2
राह सही अपनाना है - ऽऽ
जीवन गर महकाना है, तो फिर पाप हटाना है - 2
गम के साये में हो-3 नहिं राह दिखाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

क्यूँ पर को अपनाया है, भ्रम का जाल बढ़ाया है -2
खुद को यहाँ भुलाया है - ऽऽ
पराधीन पर यहाँ करे, 'पर' पर को ईजाद करे - 2
पर की मजदूरी हो-3 मजबूर कराये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

अच्छा बुरा बताता मन, सही दिशा दिखलाता मन - 2
हर व्यापार कराता मन - ऽऽ
मन को तू पहिचान अरे, मन के हैं आयाम निरे - 2
समझो इस मन को हो-3 ये सब दिलवाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

कहते मन मतवाला है, सब कुछ करने वाला है - 2
दुनियाँ ने मन पाला है - ऽऽ
मन ही हमें भ्रमाता है, नई जगह ले जाता है - 2
मन की मानें तो हो -3 मन समझ न आये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

दिल तेरा खिल जाता है, मन उमंग भर लाता है - 2
वरना मन मुरझाता है - ऽऽ
मन दर्पण कहलाता है, सब कुछ तुझे दिखाता है - 2
मन ही बोझिल हो हो-3 तो दुख बढ़ जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

दुनियाँ सब अपनी कर लो, करना हो तो सब कर लो-2
सोंना धन वैभव भर लो-ऽऽ
फिर भी रहता मन खाली, नज़र न आये दीवाली-2
कैसे मन भरता हो-3 ये कौन बताए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

भाव यहाँ हैं उच्छृंखल, तो मन रहता है चंचल - 2
मन पागल हो रहे विकल - ऽऽ
गर मन में संसार भरा, तो मन पैदा करे जरा- 2
मन को भरना हो हो-3 तो ज्ञान उपाओ रे - ऽऽऽ
जीवन ....

प्रभुगुण मन में लायेगा, शक्ति खुद पा जायेगा - 2
मन खुद ही खिल जायेगा - ऽऽ
अवगुण दिले दिखाएगा, तो मन खुद मिट जायेगा-2
मन गर हर्षाये हो-3 तो जीत दिलाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

श्रद्धा खुद दिख जाती है, भक्ति दिले समाती है - 2
शक्ति बढ़ती जाती है - ऽऽ
युक्ति निकलके आती है, मुक्ति महल ले जाती है-2
प्रभु की भक्ति ही हो-3 आराम दिलाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

दिले आस्था सच्ची हो, तो प्रभु भक्ति अच्छी हो - 2
वरना कच्ची कच्ची हो - ऽऽ
श्रद्धा ही रस लाती है, राह सही दिखलाती है - 2
सच्चा दर्शन ही हो-3 भव भ्रमण मिटाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

गुरु चरणों की शरण मिले, उसकी किस्मत यहाँ खुले - 2
अंतस् में इक दीप जले - ऽऽ
मंजिल की वह ओर चले, सम्यग्दर्शन ज्ञान खिले
उसका जीवन ही हो -3 मंगल बन जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

तन के लिये जिये कोई, मन के लिये जिये कोई-2
खुद के लिये जिये कोई - ऽऽ
उम्र मिली मजबूरी है, जीना बहुत जरूरी है - 2
जीने जीने में हो - 3 कई फर्क दिखाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

दुख लाये तन की यारी, भटकाए मन की यारी - 2
पिटवाए धन की यारी - ऽऽ
प्यारी चेतन की यारी, करो इसी की तैयारी-2
चेतन से अच्छा हो-3 नहिं मित्र दिखाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जिसने औषधि दान किया, उसने रोग निदान किया-2
मुनियों का सम्मान किया - ऽऽ
सुंदर उसको रूप मिले, कामदेव या तीर्थ बने - 2
नीरोगी काया हो - 3 खुद ही मिल जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

सत्पात्रों को दान करे, भव में भूखों नहीं मरे-2
गुरुओं का आशीष रहे - ऽऽ
दुनियाँ में सम्मान मिले, गुरुओं का वरदान मिले - 2
उसकी ही नैया हो - 3 भव से तिर जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

दान आहार एक दिन का, औषधि एक बीमारी का - 2
अभयदान है इक भव का - ऽऽ
ज्ञान दान जो यहाँ करे, कई जनम उसके सुधरे - 2
ज्ञानी और ज्ञान हो-3 भव पार लगाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

123

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

अजब अनूठे रिश्ते हैं, जिसमें प्राणी पिसते हैं - 2
जीवन भवर वो रिसते हैं - ऽऽ
राग - द्वेष से घिसते हैं, बनते नहीं फरिश्ते हैं - 2
रिश्तों में रमना हो-3 हरदम दुखदायी रे - ऽऽऽ
जीवन ....

आओ दिले सवाल करें - कोई नहीं बवाल करें - 2
मन में मन का ख्याल करें - ऽऽ
मन कैसे रुक पायेगा, कौन हमें बतलाएगा - 2
जिसने मन जीता हो-3 ये वही बताए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

इच्छाएँ दुख लाती हैं, सबको यहाँ भ्रमाती हैं -2
अंतस् ज्ञान मिटाती हैं -ऽऽ
दिले भावना सुख लाती, जिनवाणी यह बतलाती-2
भावों की तह पर हो-3 सुख दुख नजराये रे - ऽऽ
जीवन ....

तन में मन इक यंत्र है, इसे समझना मंत्र है - 3
चेतन यहाँ स्वतंत्र है - ऽऽ
मन पर का दीवाना है, चेतन से अंजाना है - 2
मन को जाने बिन हो-3 कुछ समझ न आये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

राग-द्वेष ईज़ाद करे, वही गधों से बात करे - 2
कभी नहीं संवाद करे - ऽऽऽ
अंधकार खुद बोता है, क्यूँ पीछे फिर रोता है - 2
छोड़ो ये झंझट हो-3 खुद में रम जाओ रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जहाँ धरम की हवा चले, वहीं घरों में दीप जले - 2
रहें सभी के हृदय खिले - ऽऽ
धर्म-मर्म को जानें हम, दिल से उसको मानें हम - 2
धर्मी की बातें हो-3 हर दिल को भायें रे - ऽऽऽ
जीवन ....

क्यों इतना इतराते हो - मिट्टी पर इठलाते हो - 2
अपना इसे बताते हो - ऽऽ
दुनियाँ के इस आँगन से - खाक सुपुर्दे करें तुझे-2
उस दिन पर तेरा हो-3 क्यूँ ध्यान न जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

मिट्टी की इस काया को, दुनियाँ की इस माया को-2
तूने गले लगाया जो - ऽऽ
इक दिन ऐसा आयेगा, पिंजरे से उड़ जायेगा-2
कोई फिर तुझको हो - 3 नहिं हाथ लगाये रे - ऽऽ
जीवन ....

123

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

जाना तुझे अकेला है, चंद दिनों का मेला है - 2
गम का यहाँ झमेला है - ऽऽ
चलाचली का रेला है, पुण्य पाप का खेला है - 2
इसमें फँसकरके हो-3 क्यूँ जान गँवाए रे - ऽऽ
जीवन ....

बहुत परिग्रह ध्याओगे, तो खुद पाप कमाओगे - 2
अघ आरंभ बढ़ाओगे - ऽऽ
त्याग नहीं कर पाओगे, साथ न कुछ ले जाओगे-2
पापों में जमकर हो-3 नहिं नर्क कमाओ रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जितनी लम्बी चाहत हो, उतना ही दिल आहत हो - 2
त्याग करें तब राहत हो-ऽऽ
त्यागी ही सुख पाएगा, पापों से बच जायेगा-2
संचय की इच्छा हो-3 खुद गर्त बनाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

अच्छी शिक्षा पायें हम, ऊपर उठते जायें हम-2
जीवन सफल बनायें हम - ऽऽ
जीवन में हैं गम ही गम, संस्कार से कर लें कम - 2
थोड़ा सा जीवन हो-3 गुलजार बनाएँ रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

सार कभी नहिं पाया है, ये संसार बढ़ाया है - 2
गम का योग बनाया है - ऽऽ
चलो असार हटा लें हम, रौशन कर लें नव जीवन - 2
वरना जीवन में हो-3 संसार दिखाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

छोड़ो काम करोड़ों तुम - प्रभु से मन को जोड़ो तुम - 2
पाप विचार मरोड़ो तुम - ऽऽ
गुरु से लाखों काम बनें - प्रभु से सारे काम बनें - 2
पहिले पूजन का हो - 3 अभियान रचाओ रे - ऽऽऽ
जीवन ....

दिल का दीपक यहाँ जले, तब ही जीवन कला बने - 2
यही जीस्त का सार अरे - ऽऽ
अंत भला तो सभी भला, अंत खला तो पाप पला - 2
अंतिम साँसों में हो - 3 प्रभु का नाम पुकारो रे - ऽऽऽ
जीवन ....

मिलना मेरी किस्मत है, करना मेरा कर्म है - 2
इनसे ऊपर धर्म है - ऽऽ
धर्म कर्म को जान अरे, सच क्या है पहिचान अरे - 2
सच को जाने बिन हो-3 सच समझ न आये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

प्रभु का कर अहसास दिले, सब कुछ दिल के पास मिले - 2
अंतस् सच का दीप जले - ऽऽ
हृदय कमल का फूल खिले, जग में जग का कूल मिले-2
तब ही जीवन का हो - 3 सच साफ दिखाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

दिल छोटा क्यों करते हो, डबरे में क्यों मरते हो - 2
अपराधी क्यों बनते हो - ऽऽ
अपना जिगर विशाल करो - गुण से मालामाल करो- 2
छोटे से दिल में हो-3 प्रभु नहिं बन पायें रे - ऽऽऽ
जीवन ....

सरिता जैसे बहती है, बहती ही ये जगती है - 2
इसमें अपनी कश्ती है - ऽऽ
आओ उसे तिरा लें हम, ईश्वर के गुण गा लें हम - 2
पलभर का जीवन हो-3 क्यूँ व्यर्थ गँवाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

दिल में तुम उल्लास भरो, मन का सदा विकास करो - 2
दिल में ये विश्वास करो - ऽऽऽ
आशा हमें उठाती है, मंज़िल तक ले जाती है-2
मन में निराशा हो-3 नहिं कभी बनाओ रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

खानपान गर बढ़िया हो, खानदान वह बढ़िया हो - 2
तन पर राम चदरिया हो - ऽऽ
खान खराब तो खान है तू, वरना स्वर्ग खदान है तू-2
बनना वो बन ले हो-3 जो बनना चाहे रे - ऽऽऽ
जीवन ....

चरणों की मैं धूल हूँ, चढ़ा हुआ इक फूल हूँ - 2
जीवन की इक भूल हूँ - ऽऽ
सारी भूल मिटायें हम, भगवन् के गुण गायें हम - 2
तब ही जीवन में हो-3 सद्ज्ञान दिखाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

आया था तब तू रोया, जाते जाते तू सोया - 2
सारी उमर बोझ ढोया - ऽऽ
रिश्तों में खोया - खोया, क्या सोचा पर क्या बोया - 2
पत्नी-पति-पोते हो - 3 ये काम न आयें रे - ऽऽऽ
जीवन ....

दुनियाँ रैन बसेरा है, क्या तेरा क्या मेरा है - 2
चंद दिनों का डेरा है - ऽऽ
जिसको कहते मेरा है, तुझको वही लुटेरा है - 2
हर पल को जीकर हो-3 खुशहाल बनाओ रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

ओ इस तन के रखवाले, मरघट पर जाने वाले - 2
चाहे जितना इठला ले - ऽऽ
क्यूँ इतना इतराते हो, भूल यहाँ क्यों जाते हो-2
कुछ भी नहिं जाये हो-3 बस धर्म हि जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

मात-पिता को बुरा कहे, बेटी ऐसा नहीं सहे - 2
साथ न उनके कभी रहे - ऽऽ
बहू बुरा जब यहाँ कहे, बेटा सुन चुपचाप रहे - 2
बेटी ही सच में हो-3, बेटा कहलाए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

तुम चाहे कुछ भी कर लो, चाहे जितना धन धर लो - 2
कितनी यहाँ फिकर कर लो - ऽऽ
अंत समय तू पायेगा, कुछ भी साथ न जायेगा - 2
तेरा ही बेटा हो-3 तुझपे कफन चढ़ाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

दो दिन का मेहमान अरे, कितने हैं अरमान तेरे - 2
क्यूँ बनता नादान अरे - ऽऽ
इक ना इक दिन जाना है, क्यूँ इससे अन्जाना है - 2
दुनियादारी ये हो-3 दुनियाँ भटकाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

मन को मन्दिर बना लिया, दिल का दीपक जला लिया - 2
अंधकार सब मिटा दिया - ऽऽ
मन मन्दिर बन जायेगा, सभी जगह प्रभु पायेगा-2
तब ही ये जीवन हो-3 गुलशन बन जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

किससे तूने पाया क्या ?, आकर यहाँ कमाया क्या ? -2
दुनियाँ में तू लाया क्या ? - ऽऽ
तुझको अब तक भाया क्या ?, सच पर मन ललचाया क्या? -2
खोजो खुद खोजो हो-3 सच खुद दिख जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

सभी जगह हमने देखा, मिली नहीं सुख की रेखा-2
लेकिन दिल है अनदेखा - ऽऽ
दिल में नज़र गढ़ाएगा, जो चाहेगा पायेगा - 2
खुद में ही देखो हो-3 सब कुछ दिख जाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

आओ दर्शन कर लें हम, पारस प्रभु को वर लें हम - 2
थोड़ा यहाँ उभर लें हम - ऽऽ
दर्शन तुझे उठाएगा, धारा नई बनाएगा - 2
दर्शन जीवन में हो-3 सब ही दर्शाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन है इक स्वप्न अरे कब मिट जाये रे ऽऽ
निंदिया टूटेगी हो-3 तब सच नज़राये रे - ऽऽ

काल सर्प का योग यहाँ, दिलवाता है मौत यहाँ-2
मुश्किल से ये टले यहाँ ऽऽऽ
जाप विधान करोगे जब, ऐसा योग टलेगा तब-2
ईश्वर की भक्ति हो-3 हर पाप मिटाये रे ऽऽऽ
जीवन .....

खुश नसीब सी हसरत हो, दिल में कभी न नफरत हो-2
पापों में नहिं सिरकत हो ऽऽऽ
तब ये दिल होता दर्पण, मन खुद को करता अर्पण-2
खुशियों के मंजर हो-3 खुद ही बन जायें रे ऽऽऽ
जीवन .....

धरम करम कुछ अपना ले, किस्मत में कुछ लिखवा ले-2
झोली में कुछ तो पा ले ऽऽऽ
चार दिनों का मेला है, फिर तो उठना ठेला है-2
उठते जीवन में हो-3 कुछ नहिं कर पाये रे ऽऽऽ
जीवन .....

खीर पुड़ी तब पाओगे, जब तुम पुण्य कमाओगे-2
कभी न दुःख उठाओगे ऽऽऽ
दान करो, यश पाओगे, श्रावक बनकर जाओगे-2
ऐसे शुभ काम हो-3 सम्मान दिलाएँ रे ऽऽऽ
जीवन .....

123

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

क्रोध भुजंगम साँप है - क्रोध धर्म में श्राप है - 2
देता पश्चाताप है -ऽऽ
जीवन में अभिशाप है - दुर्बुद्धि की थाप है -2
क्रोध जीवन में हो - 3 बहु पाप कराये रे -ऽऽ
जीवन ....

उसका सारा क्रोध नशे - जिसके दिल में ज्ञान बसे -2
वही जगत में नहीं फँसे -ऽऽऽ
ज्ञान ज्योति सुलगाये जो, पूर्णज्ञान को पाये वो -2
सेवा गुरुजन की हो - 3 सब दुःख मिटाये रे -ऽऽ
जीवन ....

प्रभु की जिसे इनायत हो - उसकी सदा हिफ़ाजत हो - 2
गम में उसे किफायत हो -ऽऽऽ
रोज-रोज मत रोज़ाकर - खुद में खुद को खोज़ाकर -2
खुद में खुदा की हो -3 सूरत नज़राए रे - ऽऽऽ
जीवन ....

नज़र नज़ाकत बनती है - नज़र इनायत बनती है-2
नज़र शराफत बनती है-ऽऽऽ
नज़रों का ही खेल यहाँ, नज़र नज़र में जेल यहाँ-2
नज़रें नज़रों में - हो -3 सब बात बताएँ रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

दुख संताप महाभारी-सहता है ये संसारी - 2
भव भव में बारी - बारी -ऽऽ
जिसको तू दिल देता है - वही तुझे छल लेता है - 2
शरणा जिन - गुरु की हो - 3 संताप मिटाये रे - ऽऽ
जीवन ....

सूर्य उदय जब भी होता - जग प्रकाशमय हो जाता - 2
कमलों का उर खिल जाता-ऽऽऽ
रवि सम प्रभू कृपालू हैं - भवि को सदा दयालू है -2
भव्यों को भगवन हो - 3 भव पर लगायें रे - ऽऽ
जीवन ....

हो भविष्य उसका उज्ज्वल - जिसके मन में भाव विमल-2
मिलता आसन स्वर्णकमल- ऽऽ
पाता है वह वस्तु सकल - होते उसके कार्य सफल - 2
वो ही निज घर में हो - 3 आवास बनाए रे - ऽऽ
जीवन ....

खुद में खुद से करो अमल - दिल को प्रभु सा करो सरल - 2
बन जाओगे तुम्हीं ग़ज़ल -ऽऽ
सब जायें तब देख दहल - कर ले तू इक बार पहल - 2
गुण की फसलों में हो - 3 निज महल दिखाए रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

तन-घर -धन अपनी नारी, शत्रु -मित्र सुत संसारी-2
पर स्वभावमय हैं क्यारी -ऽऽऽ
मूढी इन्हें पकड़ते हैं, अपना इन्हें समझते हैं-2
पर को निज माने हो-3 वो खुद मिट जाये रे ऽऽ
जीवन ....

देश - दिशा से आते हैं-पेड़ों पर रुक जाते हैं-2
पक्षी समय बिताते हैं-ऽऽऽ
सुबह सभी उड़ जाते हैं-अपना कार्य बनाते हैं-ऽऽऽ
ऐसे ही मानव -हो-3 का चक्र दिखाए रे-ऽऽ
जीवन ....

घोर विपत्ति पाता है - निज सम्पत्ति गँवाता है-2
गम से गम उपजाता है -ऽऽऽ
शांतिनाथ का करें स्तवन-उनकी मिटती सभी तपन -2
चरणों की धूलि हो-3 सुख शांति दिलाए रे - ऽऽ
जीवन ....

अर्जित करने में दुख हो - रक्षित करने में दुख हो - 2
जिसको देने में दुख हो -ऽऽऽ
कौन कहे वह धन अच्छा ? कहता है वो है बच्चा-2
धन ही मानव में हो -3 भय रोग बढ़ाए रे ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

मुझमें कैसा सिला रहा - दिल को खुद से गिला रहा - 2
फिर भी मूरख खिला रहा -ऽऽऽ
यही वजह तिलमिला रहा - दिल को खुद से मिला रहा-
दुनिया की खातिर हो - 3 जल जल मिट जाये रे ऽऽ
जीवन ....

अपनी लख तासीर अरे - खिल जाये तद्बीर अरे - 2
मिले तुझे तकदीर अरे ऽऽ
तुझमें ही अक्सीर अरे - तुझमें प्रभु तस्वीर अरे - 2
खुद को ही लख ले-हो-3 सब कुछ दिख जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

तेरा गीत बहाना है - तुझको दिल में पाना है - 2
इसीलिए दर आना है - ऽऽऽ
अपना शीश झुकाना है - श्रद्धा हमें बनाना है - 2
ये ही परिणाम-हो-3 भव पार कराये रे - ऽऽ
जीवन ....

कई परेशां खाने से - कई परेशां खाने को-2
कई परेशां पाने को - ऽऽऽ
कई परेशां जाने से - कई परेशां जाने को - 2
सब ही परेशां-हो-3 हमको नजराये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

दया धरम का मूल है - नहिं माने यह भूल है - 2
उसका जीवन शूल है -ऽऽऽ
जीवन उसका फूल है - जो आगम अनुकूल है - 2
दुखियों की सेवा हो - 3 में धर्म समाए रे - ऽऽ
जीवन ....

कोइ तेरा अपकार करे - तुम उसको भी प्यार करो - 2
हित हो यही विचार करो -ऽऽऽ
जितना हो उपकार करो - भेद ज्ञान सत्कार करो - 2
इससे तेरा दिल हो - 3 गुणमय बन जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जहाँ स्वयं का ज्ञान है - वहीं भेद विज्ञान है - 2
ज्ञान मुनि का प्राण है - ऽऽऽ
सम्यग्दर्श प्रधान है - इससे ही निर्वाण है -2
अपने अनुभव से हो - 3 निज दीप जलाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

फूले - फूले फूल यहाँ - फूल रहा करि भूल यहाँ - 2
पैदा करता शूल यहाँ -ऽऽऽ
मिलता नहिं भवकूल यहाँ - चढ़ जाती गम धूल यहाँ-2
अपने ही घर में हो - 3 क्यूँ आग लगाए रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

अनुभव से जल जाएँगे - सबके दीप जलाएँगे-2
शिवराही बन जायेंगे -ऽऽऽ
रस्ता नया बनायेंगे - सबको धर्म दिखाएँगे - 2
ऐसे भावों से - हो - 3 दिल खिल-खिल जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

पढ़ा, न उसे विचारा है - दिल में नहीं उतारा है - 2
खुद को नहीं निखारा है -ऽऽऽ
इसीलिये अंधियारा है - दिल में नहीं उतारा है - 2
खुद को ही पढ़ लो हो - 3 सब कुछ पढ़ जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

किस किसको हम याद करें - किससे यहाँ विवाद करें-2
किससे यहाँ विषाद करें-ऽऽऽ
खुद से ही संवाद करें - अपना ही ईजाद करें - 2
इससे ही दिल का हो - 3 दीपक जल जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

वाणी जिसकी पावन हो - मन की शुद्धि सावन हो - 2
मुक्ति मिले यह भावन हो -ऽऽ
प्रभुवर के गुण गायेगा - दिल में ज्ञान सजाएगा - 2
वाणी ही प्राणी हो -3 का भाव बताए रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

हाथों से नहिं दान दिया - नहीं वेद का ज्ञान किया - 2
हरदम धन पर ध्यान दिया -ऽऽऽ
गुरुसेवा में नहीं गया - तीरथ करना भूल गया - 2
ऐसे नर - नारी - हो - 3 अति निंद बताये रे - ऽ
जीवन ....

मित्र पुनः मिल सकते हैं - वैभव फिर मिल सकता है-2
पत्नी फिर मिल सकती है ऽऽ
सब कुछ फिर मिल सकता है - धर्म नहीं मिल सकता है-2
धर्मी को पाकर - हो - 3 निज धर्म को पाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

प्रभु को जरा न ध्यायेगा - तू जर जर हो जायेगा - 2
जरा अंत में पाएगा -ऽऽऽ
जरा जरा सी भूल यहाँ - जरा करे प्रतिकूल यहाँ - 2
हरदम जरा ने - हो - 3 बहु दुख बढ़ाए रे - ऽऽ
जीवन ....

जमता वही ज़माने में - जिसकी चाह खज़ाने में - 2
गम पाता अज्जाने में - ऽऽऽ
मिटता कर्म कमाने में - अच्छा बुरा बनाने में - 2
जम जमके जग में हो-3 क्यूँ ठोकर खाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

मुश्किल से धन आता है - फिर भी वह मिट जाता है - 2
असुरक्षित कहलाता है -ऽऽऽ
धन को पाकर स्वस्थ कहे - ऐसा मानव मूर्ख अरे - 2
ज्वर में घी पी ले हो - 3 वो मूर्ख कहाये रे - ऽऽ
जीवन ....

धू-धू कर वन आग लगी - घबराकर पशु भगे सभी - 2
तरु पे मनु की सोच तभी -ऽऽ
आग में ये जल जाएँगे - भारी दुक्ख उठायेंगे - 2
अपना नहिं सोचे - हो - 3 हम भी जल जायेंगे -
जीवन ....

ज्यों ज्यों आयु बढ़ती है - त्यों त्यों तृष्णा बढ़ती है - 2
आसक्ति नहिं घटती है - ऽऽ
धन पाना उत्कृष्ट है - जीवन फिर नहिं इष्ट है - 2
मानव ये समझे हो - 3 मुनिराज बताएँ रे ऽऽ
जीवन ....

दिल में नहीं गरूर है - उसको यहाँ सऊर है - 2
उसमें धर्म जरूर है -ऽऽऽ
जो खुद में मगरूर है करता वही कसूर है - 2
बीज जो बोया - हो - हो - हो वैसा फल आये रे - ऽऽ
जीवन ....

123

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

जिनके यहाँ उजाले हैं - उनके प्रभु रखवाले हैं - 2
वे सच्चे दिल वाले हैं -ऽऽऽ
जो विष भोग से काले हैं - उनके दिल में छाले हैं -2
अपने ही गम में - हो - 3 वे खुद मर जायें रे ऽऽ
जीवन ....

दिल को पत्थर बना लिया-खंजर खुद पर चला लिया -2
जख्म जिगर में बढ़ा लिया -ऽऽऽ
घायल हुए घूमते हम - नहीं धर्म की है मरहम - 2
दर - दर के मारे हो - 3 गम खूब उठाये रे - ऽऽ
जीवन ....

इंतकाम दिल लाओगे - इंतजाम कर जाओगे -2
सुख अंजाम - ए पाओगे-ऽऽ
आयेगा पैगाम तभी - नहिं होगा बदनाम कभी - 2
अपना अपने में हो - 3 इक दिन मिल जाये रे -ऽऽ
जीवन ....

मंदिर झूठी मिन्नत है - मन नहिं पाता उन्नत है - 2
नहीं मिले, जो जन्नत है -ऽऽऽ
रब की रहमत पाना है - रिश्ता नया बनाना है - 2
यारब ही सबको हो - 3 सच राह दिखाए रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

जीने का नहिं हुनर यहाँ - पीता रहता जहर यहाँ - 2
मिलता अपना शहर कहाँ ? -ऽऽऽ
गम में मिलता सफर कहाँ ? अपनी होती सहर कहाँ ? - 2
गम की गलियों में- 3 नहिं राह दिखाए रे - ऽऽ
जीवन ....

गुलशन जीस्त बनाएँगे - सुंदर फूल लगायेंगे - 2
सारा जग महकाएँगे ऽऽ
अपने छोटे जीवन को रोशनमय कर जायेंगे - 2
तब ही जीवन में हो - 3 निज सार समाये रे - ऽऽ
जीवन ....

दिल में सच अफसाने हैं - दर्श ज्ञान तहखाने हैं - 2
सत्य दृष्टि ने जाने हैं - ऽऽऽ
माने वो दीवाने हैं - नहिं माने वीराने हैं - 2
अपने ही घर में हो - 3 हर चीज दिखाये रे ऽऽ
जीवन ....

मन में नहीं उमंग है - उज्ज्वल नहीं तरंग है - 2
पर परिचय के संग है - ऽऽऽ
दिल उज्ज्वल पर तंग है - कर्मों की ये जंग है - 2
हालत यह देख हो 3 - ये दिल घबराये रे ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

मन पर चढ़ती जंग है - होती नहीं उमंग है - 2
धरम करम सब भंग है -ऽऽऽ
चढ़े न मजहब रंग है - देख हृदय ये ढंग है - 2
जीवन के रंग में हो - 3 कैसे रंग पाये रे - ऽऽ
जीवन ....

दिल गुमान गर लाएगा - लहुलुहान हो जाएगा - 2
निज मकान जल जाएगा -ऽऽ
नाम निशान न पाएगा - तू जहान बन जाएगा - 2
पाना कुछ दिल में हो - 3 तो झुक झुक जाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

गैरों का उपकार करें - सबको यह इज़हार करें - 2
जीवन को गुलज़ार करें -ऽऽऽ
मुजरिम बनकर नहीं जियें - हम गुनाह से यहाँ बचें - 2
जीवन को जीवन हो - 3 की राह दिखाए रे - ऽऽ
जीवन ....

खुद को सब कुर्बानी हो - दिल हो जैसा पानी हो - 2
ऐसी जीस्त कहानी हो -ऽऽऽ
किस्मत भले पुरानी हो - खिदमत भरी जवानी हो - 2
साहिल को पाकर हो - 3 क्यों नाव डुबोये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

वहीं माँगना भला अरे - जहाँ निजी जलजला दिखे - 2
जीवन की हर कला दिखे-ऽऽऽ
सारे रोग मिटाएँगे - यही भावना लायेंगे - 2
दुनिया को चाहे हो - 3 क्यूँ भार बढ़ाए रे - ऽऽ
जीवन ....

ममता मन की तजता है - वह समता में रमता है - 2
कर्मों को वह नशता है -ऽऽऽ
निज में स्वयं सँवरता है - ज्ञान स्वयं का वरता है - 2
मोह की मति को हो - 3 जो दूर हटाए रे - ऽऽ
जीवन ....

धर्म - कर्म पाखण्ड किया - खुद को नहीं अखण्ड किया - 2
ये चेतन को दण्ड दिया -ऽऽ
निज अखण्डता पाओगे - तब ही गुण वर पाओगे - 2
गुण बिन क्रिया में हो - 3 नहिं सार दिखाये रे - ऽऽ
जीवन ....

मंत्र साधना मन की है - तंत्र साधना तन की है - 2
यंत्र साधना भव की है -ऽऽऽ
तीनों ही चेतन की हैं - निज गुण के वेतन की हैं - 2
आराधन - साधन हो - 3 निज साध्य दिलाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

जग में जो जग जाएगा - उसका जग मिट जायेगा - 2
ज्ञान दीप जल जायेगा -ऽऽऽ
जो जग में सो जाता है - वो जग में खो जाता है - 2
सोने में सोंना हो - 3 नहिं कभी दिखाए रे - ऽऽ
जीवन ....

सुख को हरदम चाहा है - दुख से दिल घबराया है - 2
सुख को सदा सराहा है ऽऽ
दुख को ही अपनाया है - अपने गले लगाया है - 2
दुख को जाने बिन हो - 3 सुख समझ न आये रे - ऽऽ
जीवन ....

मन प्रभु पर नहिं जाता है - मन, पर पर ही जाता है - 2
मन ही कर्म बढ़ाता है - ऽऽऽ
मन की गर तुम मानोगे - खुद को नहिं पहिचानोगे - 2
मन ही भव वन में हो -3 सबको भटकाये रे - ऽऽ
जीवन ....

एक आँख नहिं तन में हो - सब जन कहते काने हो - 2
इस भव में बेगाने हो - ऽऽ
चेतन की गर आँख नहीं - तब तो अंधे हुए यहीं - 2
अंतस् की आँख हो-3 हर चीज दिखाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

अमृत आता चेतन से - जहर उगलता है मन ये - 2
प्रकट करे सारा तन ये -ऽऽऽ
चेतन से मन मिल जाये - मार्ग तभी सच दिख पाये - 2
चेतन ही मन को हो - 3 मंजिल दिखलाए रे - ऽऽ
जीवन ....

मन टिकता पर पैर नहीं - उसको समझो संत यहीं - 2
वह राजा है, रंक नहीं -ऽऽ
पैर टिके मन भगता है - वही गृही सा लगता है - 2
मन के टिकने पर हो - 3 सब कुछ टिक जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

गुरु कुम्हार कहलाते हैं - शिष्य को घड़ा बनाते हैं - 2
सारे खोट मिटाते हैं - ऽऽ
फिर वे उसे पकाते हैं - शहरों में भिजवाते हैं - 2
कीमत घड़े की हो - 3 नित बढ़ती जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

श्रद्धा सच्ची होती है - तब अच्छी अनुभूति है - 2
जले ज्ञान की ज्योति है -ऽऽऽ
पक्षपात हट जायेगा - धर्म समझ तब आयेगा - 2
राग - द्वेषों में हो - 3 नहिं सत्य दिखाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

आँख हिये की फूटी है - दिल में विष अनुभूति है - 2
टाँग उसी की टूटी है -ऽऽऽ
पक्षपात जो लायेगा - अपना धर्म मिटाएगा - 2
सच्ची श्रद्धा में हो - 3 पग - आँख समाए रे - ऽऽ
जीवन ....

निज निंदा में नंदपना - पर निंदा में निंदपना - 2
निंदा में है फर्क घना-ऽऽऽ
इक निंदा में आग है, निंदा एक चिराग है - 2
निंदा सुख-दुख में हो - 3 परिपाक घटाये रे - ऽऽ
जीवन ....

गलत यहाँ सच माना है - सच को नहिं पहिचाना है - 2
मिथ्या का दीवाना है -ऽऽ
पक्षपात सब तजना है - सम्यक् सम्यक् भजना है - 2
अर्थी अहं की हो - 3 निज हाथ उठाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

अंधकार में आते हैं - तम में ही मर जाते हैं - 2
कुछ जल करके जाते हैं -ऽऽ
कोई उजाले में आते - और अंधेरे में जाते - 2
आने जाने की हो - 3 ये दशा बतायें रे ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

क्यूँ बनता है बौर यहाँ - तू खुद है सिरमौर यहाँ-2
कितना रहना और यहाँ ! -ऽऽऽ
किसका कितना ठौर यहाँ ! - जन्म मरण का दौर यहाँ - 2
पल भर का जीवन हो - 3 क्यों व्यर्थ गंवाये रे - ऽऽ
जीवन ....

धन की महिमा न्यारी है - जान नहीं अब प्यारी है - 2
कैसी ये लाचारी है ऽऽ
मालिक बना भिखारी है - ये कैसी मति मारी है - 2
धन में जीवन को - हो - 3 तुम नहीं लगाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

भावों में ही बंध यहाँ - भावों से निर्बन्ध यहाँ - 2
हृदय भाव का छंद यहाँ- ऽऽ
प्राणी हो स्वच्छंद यहाँ - गर आँखों में धुंध यहाँ - 2
अंतस् आँखों में - हो - 3 सब कुछ दिख जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

अन्य जगह पर पाप किये - धर्म स्थल पर नाश किये - 2
ऋषियों ने यह गाया है -ऽऽऽ
धर्मस्थल पर पाप हुए - बिन भोगे नहिं नाश हुए - 2
ऐसे कर्मों से - हो - 3 भगवान बचाए रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

गम से जीवन भरा खचित - ज्ञान बढ़ाना सदा उचित - 2
जीवन जैसे सूत्र गणित -ऽऽ
हल करना है सरल यहाँ - हाल बदलना कठिन यहाँ - 2
रक्षित कर जीवन - हो - 3 ऊपर उठ जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

आज नियम हम डालेंगे - धीरे - धीरे पालेंगे - 2
इक दिन फल पा जायेंगे - ऽऽ
लगे बीज में अल्प समय - फल में लगता बहुत समय -2
बीज था कैसा - हो - 3 ये फल बतलाए रे - ऽऽ
जीवन ....

इधर - उधर की चिंता छोड़ - मन को तू मज़हब से जोड़-2
मन को थोड़ा खुद में मोड़ -ऽऽऽ
इक दिन सच आ जायेगा - बदल स्वयं तू जायेगा-2
खुशियों का सावन - हो - 3 खुद में लहराये रे ऽऽ
जीवन ....

सौ चिराग हों बुझे अगर - कोइ न उससे जले मगर -2
जला चिराग जलाये सब -ऽऽऽ
हों हजार मुर्दे पर क्या? मुर्दा किसे जला सकता ?
जिंदा हों चार - हो - 3 तो सब जल जायें रे ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

सार मिले इस जीवन में - नहीं जरूरी भव वन में - 2
अर्थी मिले जरूर तुम्हें -ऽऽऽ
गर आना जब निश्चित था तो जाना भी निश्चित है
अर्थी के पहिले - हो - तू खुद जल जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

'अ' से ही अश्लील बना - 'अ' से ही अरिहंत बना - 2
'अ' से ही है -अजर - अमर-ऽऽ
'स' से सत्यानाश बना, 'स' से साकी सत्य बना - 2
अक्षर प्रस्तुति में - हो - 3 हम ध्यान लगायें रे - ऽऽ
जीवन ....

कफन न बदला मुर्दों ने - चमन न बदला फूलों ने - 2
वचन नहीं अरिहंतों ने -ऽऽऽ
हम ही ऐसे दिखते हैं - क्षण - क्षण यहाँ बदलते हैं - 2
खुद को हम देखें हो - 3 तो सब पा जायें रे - ऽऽ
जीवन ....

'क' से सीख कमाना है - 'ख' से सीखो खाना है-2
'ग' से प्रभु गुण गाना है -ऽऽऽ
'घ' से बना नया घर तू - पढ़ ये पाठ यहाँ पर तू - 2
वरना तू ङ पे - हो - 3 कुछ भी नहिं पाए रे - ऽऽ
जीवन ....

123

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

चिंतामणि सा रत्न मिला - दिल में नहिं शुभ यत्न खिला - 2
किया स्वयं से यहाँ गिला -ऽऽ
रंजोगम में रहा सिला - ज्ञानदीप नहिं कभी जला - 2
अनुपम ये जीवन हो - 3 क्यूँ क्षुद्र बनाये रे - ऽऽ
जीवन ....

दुनियाँ के सब झंझट में - हर प्राणी है संकट में - 2
राग द्वेष के कंटक में -ऽऽऽ
जग जी का जंजाल है - फँसे तो मिलता काल है - 2
सोना अब छोड़ो हो - 3 जल्दी जग जाओ रे ऽऽ
जीवन ....

फ़िकर न पर की करना है - फ़कत फ़िकर निज करना है - 2
(दया) फज़ल सभी पर करना है -ऽऽ
खुशगबार हो फिज़ा सभी - मिटे गमों की कज़ा सभी - 2
सीरत कर हासिल हो - 3 कोहराम हटाये रे - ऽऽ
जीवन ....

हो नसीब किरदार जभी - हक का वो हकदार तभी - 2
अभी - अभी या मिले जभी -ऽऽ
हिकमत तू बुलंद कर ले - दर्द भरा दिल खुश कर ले - 2
जिल्लत से हटकर हो - 3 जन्नत को पाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

काबलियत तू पाएगा - कादिर दिल हो जाएगा - 2
रब को दिल में पाएगा -ऽऽऽ
मिलनसार बन जाएगा - गम सारे दफनाएगा - 2
खुशियों का तोहफा हो - 3 तू खुद बन जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

मज़हब में शर्मिंदा है - वो इंसां कब ज़िन्दा है ? - 2
दिखने में वाजिन्दा (धूर्त) है -ऽऽ
अंजामे गम पायेगा - किस्मत नहिं चमकाएगा - 2
जिंदादिली का हो - 3 क्यूँ ख्वाब बनाए रे - ऽऽ
जीवन ....

सबको करता क्षमा हूँ मैं - सारे मुझको क्षमा करें - 2
धर्म का अनुसरण करें-ऽऽ
यहाँ मित्रता सबसे हो - वैर किसी से कभी न हो - 2
निर्मल भावों में हो - 3 परिणाम रमाए रे - ऽऽ
जीवन ....

दुख में सुख में समता हो - बन्धु न घर में ममता हो - 2
मन में नहीं विषमता हो -ऽऽऽ
योग - वियोग भवन - वन में - रहें हमेशा चेतन में - 2
भावों से भव के हो - 3 सब कर्म नशायें रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

इस दिल को दिलशाद करो - नई चीज ईज़ाद करो - 2
जीस्त स्वयं आबाद करो -ऽऽऽ
निज प्रभु से संवाद करो - बंधन से आज़ाद करो - 2
तेरा तब जीवन हो - 3 गुलशन बन जाए रे ऽऽ
जीवन ....

मन उमंग भर जाएगा - तन तरंग भर लाएगा - 2
हृदय कमल खिल जाएगा -ऽऽऽ
ज्ञान रंग चढ़ जाएगा - जीवन खिल खिल जाएगा - 2
ज्ञान की मन में हो - 3 अब ललक जगाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

राग द्वेष में जीते हैं - धर्म - कर्म से रीते हैं - 2
मोही मदिरा पीते हैं -ऽऽ
सही ज्ञान अब पाना है - मन में उमंग लाना है - 2
वरना जीवन का हो - 3 रंग कोइ न आये रे ऽऽऽ
जीवन ....

हो कषाय गर वाणी में - प्रीति हो कैसे प्राणी में - 2
यही कहा प्रभुवाणी में -ऽऽऽ
फूल झरें निज वाणी में - अमृत घुले कहानी में-2
वाणी व्यक्ति का हो - 3 व्यक्तित्व बताए रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

रिश्ते - नाते झूठे हैं - लगते बड़े अनूठे हैं - 2
बंधन के सब खूंटे हैं -ऽऽऽ
वीतराग से रूठे हैं - राग द्वेष ने गूँथे हैं -2
रिश्तों के घर में हो - 3 नहिं रूह दिखाये रे - ऽऽ
जीवन ....

दृष्टि नहीं मिल पाएगी, कैसे ज्योति आयेगी ? - 2
ज्योति बिना नहिं सत्य मिले -ऽऽ
सत्य न जो लख पाएगा - गुण से नहिं भर पायेगा - 2
जीवन का सच वो - हो - 2 कैसे लख पाये रे - ऽऽ
जीवन ....

गर खदान बन जाओगे - हीरे दिल में पाओगे - 2
ऊपर उठते जाओगे -ऽऽ
खान अगर तुम बने यहाँ - तम ही तम से भरे यहाँ - 2
तम के आँगन में हो - 3 कुछ नहिं दिख पाये रे - ऽऽ
जीवन ....

इच्छाओं का अंत नहीं - इच्छाओं में संत नहीं - 2
संत बिना भगवंत नहीं -ऽऽ
इच्छाओं का राग तजो - सबको ये इज़हार करो - 2
छोड़ो, पर छोड़ो - हो - 3 निज को अपनाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

123

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

गम ही गम में रहते हैं - खुशी - 2 गम सहते हैं - 2
फिर भी उसे न तजते हैं -ऽऽ
दुख को ही सुख माना है - दुख का ही दीवाना है - 2
जीवन पाने की हो - 3 अब ललक जगाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

कहीं नहीं आराम यहाँ - गम ही गम का काम यहाँ - 2
पिया मोह का जाम यहाँ -ऽऽ
नाम जपा नहिं राम यहाँ - नहीं मिले विश्राम यहाँ - 2
अपने लम्हों में हो - 3 सुख शांति दिखाए रे - ऽऽ
जीवन ....

शुद्ध नहीं पढ़ पायेगा - सिद्धि नहीं कुछ पायेगा - 2
थोड़ा द्रव्य कमायेगा-ऽऽ
उचित न फल मिल पायेगा - मंद बुद्धि रह जायेगा - 2
बोले बिन भव में हो - 3 नहिं कुछ भी पाये रे - ऽऽ
जीवन ....

सब कर्मों के मारे हैं - लिये दिले - अंधियारे हैं - 2
इसीलिये दुखियारे हैं -ऽऽ
ऐसा अब कुछ काम करो - सच्चा - सच्चा ज्ञान वरो - 2
वरना इस दिल में हो - 3 कचरा भर जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

समता में जो रहते हैं - कहते नहीं वो सहते हैं - 2
ज्ञान धार में बहते हैं - ऽऽऽ
भव में वो नहिं फँसते हैं - दुख में भी जो हँसते हैं - 2
कहने से सहना हो - 3 अच्छा बतलाये रे - ऽऽ
जीवन ....

देना दूना करना है - लेना ऊना करना है - 2
दिये बिना नहिं मिलता है -ऽऽऽ
जो भी देता जाएगा - ऊपर उठता जायेगा - 2
दान व्यक्ति का हो - 3 सम्मान बढ़ाए रे - ऽऽ
जीवन ....

जलने वाले जलते हैं - चलने वाले चलते हैं - 2
मलने वाले मलते हैं -ऽऽ
कई देख हर्षाते हैं - कई देख मुर्झाते हैं - 2
होता जो भाव हो - 3 चेहरे पर आये रे - ऽऽ
जीवन ....

देने में है प्यार जिसे - लेने का अधिकार उसे - 2
होता ऐसा भाव किसे ? -ऽऽ
किस्मत यहाँ बनाएगा - इह पर भव में पायेगा - 2
पहले हो देना हो - 3 फिर लेना आये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन खिलती धूप यहाँ कब छिप जाये रे ऽऽ
मौसम क्या मालूम हो-3 कब पलटी खाये रे ऽऽ

सूरज चाँद प्रकाशी हैं - दीपक यहाँ विनाशी हैं - 2
निज प्रकाश अविनाशी है -ऽऽऽ
अपना दीप जलाओ तुम - प्रभु को दिले मिलाओ तुम - 2
उसकी इनायत हो - 3 तुझपे हर्षाये रे - ऽऽ
जीवन ....

अपना घर हम भूले हैं - पर को पाकर फूले हैं - 2
भूले हैं अज्ञान में -ऽऽऽ
मिटते रहे अँधेरों में - इन पुद्गल के डेरों में - 2
हमको ही अपनी हो - 3 नहिं गंध सुहाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन बूँद समंदर है - दरिया - नाला मंजर है - 2
लहर शांत सब अंदर है -ऽऽ
इसको तीर्थ बनाओ तुम - तीर्थंकर बन जाओ तुम - 2
वरना जीवन में हो - 3 दुर्गंध समाये रे - ऽऽ
जीवन ....

शुरु में ताप बढ़ाते हैं - तृष्णा को सुलगाते हैं - 2
विषय भोग दुख लाते हैं -ऽऽऽ
मुश्किल से तज पाते हैं - ऐसा गुरु बताते हैं - 2
कौन सुधी फिर हो - 3 इनको अपनाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

क्यों तू बंध बढ़ाता है, बंधन ही भ्रमवाता है -2
फिर भी समझ न पाता है -ऽऽऽ
आओ बंध समझ लें हम, बंधन से कुछ हट लें हम -2
बंधन जाने बिन हो-3 निर्बन्ध न पाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

ये मानव की काया है, चतुर्गति चौराहा है -2
क्यूँ इसमें बौराया है -ऽऽऽ
इसने भ्रमण बढ़ाया है, इसने भ्रमण मिटाया है -2
कहता जो दिल वो हो-3 जल्दी कर जाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

चन्द दिनों का गाँव यहाँ, अपना एक पड़ाव यहाँ -2
कहो नहीं ठहराव यहाँ -ऽऽऽ
क्यूँ खुद को तू भूला है, इतना किसमें फूला है ?-2
इक पल में यारो हो-3 क्या से क्या हो जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

चंद क्षणों का डेरा है, चौरासी लख फेरा है -2
हरदम काल लुटेरा है -ऽऽऽ
जग तेरा न मेरा है, इसमें रैन बसेरा है -2
अपने ही घर में हो-3 सुख-शान्ति दिखाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

पर से तू आसक्ति हटा, सिर से अपना बोझ घटा -2
अंतस् को तू देख जरा -ऽऽऽ
राग-द्वेष का भाव मिटा, वीतराग का करो पता -2
पर की परिणति में हो-3 नहिं राह दिखाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

भोगों में तू कहे मज़ा, हरदम ढूढ़े तुझे कज़ा -2
मज़ा नहीं ये तुझे सज़ा -ऽऽऽ
कर ले अच्छी यहाँ रज़ा, थोड़ा भइया यहाँ लज़ा -2
गम को अपनाकर हो-3 क्या गम मिट पाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

पूजा तुम कर जाओगे, सम्यग्दर्शन पाओगे -2
शुद्धातम लख जाओगे -ऽऽऽ
समयसार है पूजन में, पाओगे सब प्रभु गुण में -2
जिनवर की पूजा हो-3 हर काम बनाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

छोड़े सभी प्रमाद यहाँ, दिल कर तू दिलशाद यहाँ -2
होगा तब आज़ाद यहाँ -ऽऽऽ
जिगर न कर नाशाद अरे-खुद को कर ईज़ाद अरे- 2
तुझमें ही तेरी हो-3 खुशबू नज़राये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

123

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे – ऽऽ

घर तेरा नहिं गाँव है, शहर नहीं ठहराव है -2
ये तो एक पड़ाव है -ऽऽऽ
पलभर हमको रहना है, कर ले जो कुछ करना है -2
हरपल ही हमको हो-3 वह मौत बुलाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

मज़मा करता रहता है, सहमा-सहमा रहता है -2
दुनिया के गम सहता है -ऽऽऽ
दिल में अच्छी रज़ा बना, भव की सारी सज़ा मिटा -2
हरदम हम सबको हो-3 वह मौत डराये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

अपना लौटा थामें हम, किसका लोटा छानें हम ?-2
अपने को ही जानें हम -ऽऽऽ
कुआ न कोई छान सका, कोइ न पर की मान सका -2
अपने में देखो हो-3 सब कुछ दिख जाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

धन पाकर जो अंधा है, वो प्रभु का नहिं बंदा है -2
दिखने में बाज़िंदा है -ऽऽऽ
दुनिया गोरख धंधा है, इसमें रमना गंदा है -2
खुद में रम जाओ हो-3 तो गुण मिल जायें रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे – ऽऽ

दिल को गुल सा खिला-खिला, राग-द्वेष तू भुला-भुला -2
आतम का रस पिला-पिला -ऽऽऽ
कर्मों की जड़ हिला-हिला, छोड़ सभी तू यहाँ गिला -2
दिल के गुलशन में हो-3 खुद गुल खिल जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

पहिने गम का बाना है, फिर भी तू अंजाना है -2
दुःख तूने सुख जाना है -ऽऽऽ
सुख तो दिले खज़ाना है, कभी न ये पहिचाना है -2
गम को जाने बिन हो-3 गम कभी न जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

गम की राह सजोते हैं, पीछे गम में रोते हैं -2
व्यर्थ हि बोझा ढोते हैं -ऽऽऽ
पाकर सब कुछ खोते हैं, लोग भी ऐसे होते हैं -2
गम की राहों में हो-3 नहिं खुशी दिखाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

आलस ने बरबाद किया, इंसां को नाशाद किया -2
उजला होने नहीं दिया -ऽऽऽ
जला न दिल का कभी दिया, ठोकर खाता यहाँ जिया -2
चेतो अब चेतन हो-3 चेतनता लाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

123

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

गुलशन में गुल खिलें वहाँ, संतों का आगमन जहाँ -2
चैन शरण हो अमन वहाँ -ऽऽऽ
संत गुणों की खान है, इंसां में भगवान है -2
संतों को पाकर हो-3 इक दिया जलाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

बेश कीमती है क्षण-क्षण, जीवन कर ले तू अर्पण -2
ईश्वर दिखता है कण-कण -ऽऽऽ
जागेगा तो सफल जनम, वरना हो कइ बार मरण -2
सच्चाई पाकर हो-3 दर्पण बन जाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

धर्म हृदय में आयेगा, निश्छलता प्रकटाएगा -2
जीवन सफल बनाएगा -ऽऽऽ
धर्म कला विज्ञान है, जिसमें सबका ज्ञान है -2
धर्मी मिल जाये हो-3 तो धर्म दिखाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

गुरुनिंदा मुख लाएगा, वह मुर्दा कहलाएगा -2
कभी नहीं उठ पाएगा -ऽऽऽ
जिंदा उनको कहते हैं, जो गुरु के संग रहते हैं -2
जिन गुरु की भक्ति हो-3 भव पार कराये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

अब तुम मत नादान बनो, दिल से पूजन दान करो -2
नरभव का सम्मान करो -ऽऽऽ
ऐसा नहिं कर जायेगा, अंजामे गम पाएगा -2
छोड़ो नादानी हो-3 सद्ज्ञान बढ़ाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

गुरु चरणों में आता जो, अपना भाग्य जगाता वो -2
अंजाना सुख पाता वो -ऽऽऽ
किस्मत वो चमकाएगा, जो गुरु का हो जाएगा -2
मिट्टी का गुरु भी हो-3 सद्ज्ञान दिलाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जब-जब गुरु बनाएगा, तब-तब सुख तू पाएगा -2
हल्का तू हो जाएगा -ऽऽऽ
गुरु ही भार हटाते हैं, नई रोशनी लाते हैं -2
जीवन को गुरु ही हो-3 संदीप बनाएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

भक्ति हृदय में आ जाये, श्रद्धा तब खुद दिख जाये -2
चेतन शक्ति बढ़ जाये -ऽऽऽ
प्रभु गुण में तन्मय हो लो, खोकर सब प्रभु के हो लो -2
भक्ति की शक्ति हो-3 सब काम बनाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

सोने वाला रोता है, पाया उसको खोता है -2
बीज दुखों का बोता है -ऽऽऽ
पुरुषारथ जब होता है, फिर होना वो होता है -2
जागो अब जागो हो-3 मत नींद बढ़ाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

श्रद्धा सच्ची बनती है, तब सच राह निकलती है -2
भक्ति अच्छी लगती है -ऽऽऽ
श्रद्धा से जब जाप किया, तब कर्मों को साफ किया -2
मंज़िल का रस्ता हो-3 श्रद्धान बताये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

मन की चाहत हरियाली, लेकिन रहे सदा खाली -2
दिखे भले ही दीवाली -ऽऽऽ
मन की बात न मानो तुम, बात हृदय की ध्या लो तुम -2
तब ही ये जीवन हो-3 मंगल बन जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

मन भरने की चीज नहीं, इसका कोई बीज नहीं -ऽऽऽ
दिखती है तरकीब नहीं -2
हृदय ज्ञान से भरता है, काम सभी मन करता है -2
ज्ञान को पाओ हो-3 मन चुप हो जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

भेदज्ञान से पाया है, तन मिट्टी की काया है -2
चेतन इसमें छाया है -ऽऽऽ
चेतन शुद्ध अरूपी है, निर्विकार गुण रूपी है -2
चेतन मिलते ही- हो-3 चिंता मिट जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

धरा-धरा पर सारा धन, धन में धरा तुम्हारा मन -2
भूल रहा अपनी चेतन -ऽऽऽ
धन कोहराम कराता है, दुनियाँ में भटकाता है -2
अपना धन पाओ हो-3 तब राह दिखाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

हम जब भीतर जाते हैं, तब हम तिरते जाते हैं -2
तिरना भीतर जाना है -ऽऽऽ
भीतर-भीतर जाओ तुम, भव से भी तर जाओ तुम -2
भीतर जो जाये-हो-3 वह ही तिर जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

आज नहीं कल जाना है, किसका कौन ठिकाना है ?-2
क्यों इससे अंजाना है -ऽऽऽ
कब तक प्राण गँवाओगे, खुद को यहाँ भुलाओगे -2
दुनियाँ के काँटे हो-3 चुभकर दर्द बढ़ाएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

जिनका दिल नहिं साफ यहाँ, वो होते नापाक यहाँ -2
उनकी होती धाक कहाँ ?-ऽऽऽ
दिल को निर्मल साफ करो, प्रभुवर की नित जाप करो -2
साक़ी को ध्याकर हो-3 शुभ राह बनाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

दुनिया गोरख धंधा है, क्यों तू इसमें अंधा है -2
तन का साथ हि गंदा है - ऽऽऽ
दिल में धर्म समाए है, वो इंसा ही जिंदा है -2
सच में सच पाना हो-3 नहिं सुलभ दिखाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

संत जहाँ आ जाते हैं, अमृत वहाँ पिलाते हैं -2
श्रावक जन हर्षाते हैं -ऽऽऽ
चौका खूब लगाते हैं, जीवन धन्य बनाते हैं -2
साधु बिन जीवन हो-3, नहिं धन्य कहाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

ईश्वर बैठा संत है, चले साधु भगवंत है -2
जाना ज्ञान अनंत है -ऽऽऽ
साधु से हम प्रेम करें, सेवा में हम लगे रहें -2
मालुम क्या तुझको हो-3 साधू कब चल जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

धर्म हृदय में पलता है, जहाँ दिले नहिं छलता है -2
दीप धरम से जलता है -ऽऽऽ
जीवन स्वयं निकलता है, पाप कर्म जब गलता है -2
धर्मी में धर्म हो-3 खुद ही आ जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

आत्म शक्ति में भक्ति मिले, अंतस् की अभिव्यक्ति खिले -2
तभी धरम का दीप जले -ऽऽऽ
प्रभुभक्ति में राह दिखे, इक दिन दिले मुकाम दिखे -2
भक्ति में युक्ति हो-3 स्वयमेव दिखाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन नया बनाना है, तो कर्त्तव्य सजाना है -2
संस्कार अपनाना है -ऽऽऽ
महका-महका जीवन हो, स्वर्गों का घर उपवन हो -2
तब ही जीवन का हो-3 आधार दिखाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

कब तक यहाँ चलाओगे, अपना हृदय दुखाओगे -2
खुद को यहाँ भुलाओगे -ऽऽऽ
घुट-घुट करके रोयेगा, गर नहिं धर्म संजोएगा -2
धर्म जीवन में हो-3 शिवमार्ग बताये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

अवगुण गुण बतलाते हो, लोगों को समझाते हो -2
अच्छे गुण नहिं गाते हो -ऽऽऽ
पर अवगुण नहिं, गुण देखो, अपने अवगुण को फेंको -2
तब ही जीवन में हो-3 शुभ कुल मिल पाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

दर्द किसी में दिख जाये, करुणा स्वयं छलक आये -2
समझो तभी धरम आये -ऽऽऽ
सबको मित्र बनाना है, प्रेम यहाँ बरसाना है -2
दुश्मन फिर जग में हो-3 नहिं हमें दिखाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

क्या तुम द्रव्य चढ़ाते हो, तुच्छ फलों को पाते हो -2
फिर भी तुम हर्षाते हो -ऽऽऽ
व्यंजन आदि चढ़ाते हो, खूब तभी तुम खाते हो -2
खुद को चढ़ाओ हो-3 तो खुदा को पाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

इस तन पर मत इठलाओ, धन पाकर मत इतराओ -2
करो धरम, नहिं शरमाओ -ऽऽऽ
तन तप करने मिला यहाँ, क्यों भूला ये बात यहाँ -2
इक दिन पंछी ये हो-3 तन से उड़ जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

हम जब भीतर जाते हैं, तब हम भी तर जाते हैं -2
भीतर-भीतर तिरना है -ऽऽऽ
तुम भी अब भीतर जाओ, जिससे तुम भी तर जाओ -2
भीतर तिरने की हो-3 इक कला दिखाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

आओ ईश्वर जानें हम, उसकी सत्ता मानें हम -2
कभी न अपनी तानें हम -ऽऽऽ
ईश्वर से सब मिलता है, मन फूलों सा खिलता है -2
ईश्वर बिन जीवन हो-3 भू-भार बताएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

मन वच काय विकल्प नहीं, समझो जिंदा धर्म वहीं -2
और कहीं भी धर्म नहीं —ऽऽऽ
मन को निर्विचार कर ले, दया धर्म जल्दी वर ले -2
खुद में खो जाना हो-3 सच धर्म बताएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

कर्त्तापन खो जाता है, निर्विकल्प हो जाता है -2
वीतराग पन आता है -ऽऽऽ
दिले धर्म तब पाता है, ये जिन धर्म बताता है -2
धर्म का मतलब हो-3 खुद में रम जायें रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

धर्म मनुष्य बनाता है, जीवित धर्म खिलाता है -2
दिल में ज्योति जलाता है -ऽऽऽ
धर्म मर्म दिखलाता है, सारे कर्म मिटाता है -2
धर्मी की सेवा हो-3 में धर्म दिखाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

लीन पाप में अंधा है, गूँगा, करे जो निंदा है -2
हरदम वो शर्मिन्दा है -ऽऽऽ
निंदा सुनता, बहरा है, जाये न मंदिर, लंगड़ा है -2
कुछ भी नहिं पाया- हो-3 फिर भी इतराए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

हृदय धरम से सुन्दर हो, सच से वाणी सुन्दर हो -2
हाथ दान से सुन्दर हों -ऽऽऽ
पाँव तीर्थ से सुन्दर हों, आँख दर्श से सुन्दर हों -2
सुन्दर हो मंजर हो-3 तो मन हर्षाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

सुना नहीं जिन वचनों को, नहीं निहारा जिनवर को -2
कभी न चाहा मुनिवर को -ऽऽऽ
प्रभु गुण का नहिं गान किया, धन दौलत पर मान किया -2
ऐसे ये मानव हो-3 सब पशु कहलायें रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

पर घर में धन मित्र है, वैद्य रोग का मित्र है -2
गम की किस्मत मित्र है - ऽऽऽ
मरण समय जब आएगा, धर्म मित्र बन जाएगा -2
धर्म नहीं है, हो-3 तो मरता जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जिसने धर्म किया सच्चा, उसको मिला जिगर अच्छा -2
उसकी प्रभु करे रक्षा - ऽऽऽ
नहीं मिला तो पाओ तुम, मिला उसे अपनाओ तुम -2
मंजिल का रास्ता हो-3 गुरु धर्म बतायें रे -ऽऽऽ
जीवन ....

पाप-पुण्य का खेल यहाँ, भव दोनों की जेल यहाँ -2
नहीं बना तू जेल यहाँ -ऽऽऽ
ऐसा खेलो खेल यहाँ, मिट जाये भव जेल यहाँ -2
भव में क्या रमना हो-3 निज में रम जाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

भाव विनम्र हमारा हो, नई ज्ञान की धारा हो -2
एक विवेक सहारा हो -ऽऽऽ
आओ नयी शान वर लें, नहीं किया उसको कर लें -2
आँख हिये की हो-3 बुद्धि खुलवाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

123

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

उसका ध्यान लगाओगे, गर दिल में अपनाओगे -2
ऊपर उठते जाओगे -ऽऽऽ
उसके अगर खिलाफ़ चले, तो फिर गिरते फिरे रहे -2
पत्ता उसके बिन हो-3 भी नहिं हिल पाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

खुद से ही अनुराग करो, तीर्थक्षेत्र पर त्याग करो -2
जीवन अपना पाक करो -ऽऽऽ
गम का कम परिपाक करो, अपना पथ ईज़ाद करो -2
तब ही जीवन में हो-3 शुभ राह दिखाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

गुरु से कुछ भी नहीं मिले, मिले नहीं वो कहीं मिले -2
गुरु से ही गुल दिल-ए-खिले -ऽऽऽ
सब प्रश्नों के जवाब हैं, गुरु ही खिलते गुलाब हैं -2
गुरुवर से बढ़कर हो-3 नहिं कोई दिखाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

ज्ञान नहीं दिल पाएगा, जीवन भर पछताएगा -2
राह नहीं सच पाएगा -ऽऽऽ
संस्कार शुभ लाएगा, खुशियों से भर जाएगा -2
जीवन के रथ को हो-3 शुभ राह चलाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

बीज गमों के बोता है, समय गमों में खोता है -2
फिर क्यों पीछे रोता है -ऽऽऽ
पहले जग में सोता है, गम का बोझा ढोता है -2
गैरों में हरदम हो-3 तू लगन लगाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

खुद में लगन लगा ले तू, जीवन स्वयं बना ले तू -2
मज़हब को अपना ले तू -ऽऽऽ
राग-द्वेष हटा ले तू, गीत स्वयं के गा ले तू -2
जीवन के हरपल हो-3 बहुमूल्य बताएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

बचपन खेलकूद खोया, देख जवानी बौराया -2
बूढ़ेपन में चिल्लाया -ऽऽऽ
खुद को नहीं समझ पाया, दुनिया में ही भरमाया -2
सच्चा हमराही हो-3 गुरुदेव दिखायें रे -ऽऽऽ
जीवन ....

दिल से जिसको पाला है, कहते हो मम लाला है -2
वह बेटा ही हाला है -ऽऽऽ
अर्थी वही बनाएगा, मरघट पर ले जाएगा -2
तेरा ही बेटा हो-3 तुझमें आग लगाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

123

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

जीवन की हो प्यास यहाँ, हरदम रहे प्रयास यहाँ -2
निश्चित होंगे पास यहाँ -ऽऽऽ
ऐसा करि विश्वास दिले, खुद का स्वयं निवास मिले -2
तब ही ये जीवन हो-3 कुछ समझ में आये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

हो कषाय से अनुरंजित, योग क्रिया हो संबंधित -2
राग-द्वेष के भाव सहित -ऽऽऽ
प्राण जहाँ पर रहते हैं, इसको ओरा कहते हैं -2
आगम भाषा में हो-3 लेश्या कहलाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

उदय कषायों का गर हो, योगों में अनुरक्त अहो -2
उसको लेश्या यहाँ कहो -ऽऽऽ
जो परिणाम निकलता है, आभामण्डल बनता है - 2
भावों से ओरा हो-3 सबमें बन जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

दिल में दया धर्म नहिं है, गैरों के वश में नहिं है -2
गमन सुगति जिसका नहिं है -ऽऽऽ
गैरों को दुख देता है, दुख देकर खुश होता है -2
लेश्या उसकी तो हो-3 ऋषि कृष्ण बताएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

राग-द्वेष की थैली में, परिणति मन की मैली में -2
दुनियाँ की इस रैली में -ऽऽऽ
योग कषाय मिलें जब ही, लेश्या यहाँ बने तब ही -2
आभामण्डल ही हो-3 लेश्या कहलाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

गैरों पर जो क्रोध करे, खुद पर कभी न शोध करे -2
दिल में कभी न बोध करे -ऽऽऽ
गैरों का सुख सह न सके, ईर्ष्या करके बैर धरे -2
उनकी तब लेश्या हो-3 कापोत दिखाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

दिले क्रोध जो तीव्र रखे, बैर कभी भी नहिं छोड़े -2
लड़ने को सरपट दौड़े -ऽऽऽ
दुष्टों जैसा मन रखता, हरदम पापों में रमता -2
लेश्या उसकी तो हो-3 मुनि कृष्ण बताएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जब हम खुद को चाहेंगे, तभी याद प्रभु आयेंगे -2
दिल से तब हम गायेंगे -ऽऽऽ
खुद की जब परवाह नहीं, बनती हैं तब राह नहीं -2
भटकन तब मेरे हो-3 हाथों में आये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

अपना हम सम्मान करें, पहले प्रभु गुणगान करें -2
तब ही भोजन पान करें -ऽऽऽ
ऐसा तू कर जाएगा, कहीं नहीं दुख पायेगा -2
गुरु का आशीष हो-3 फिर हरदम पाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जिन प्रभु का गुणगान किया, सबसे अच्छा काम किया -2
तेरा ही जल सके दिया -ऽऽऽ
जले दीप में दिखे सभी, कर ले ऐसा काम अभी -2
कल का क्या मालुम हो-3 आये न आये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

प्रभु के दर पर आयेगा, जब तू प्रभु गुण गायेगा -2
सच में सब पा जायेगा -ऽऽऽ
न माने तो देख जरा, डलो सिर पर कलश भरा -2
खुश होके मन ये हो-3 खुद नृत्य दिखाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

पात्र यहाँ बन जायेगा, फल तेरा लिख जायेगा -2
जगह स्वर्ग में पायेगा -ऽऽऽ
पात्र पात्रता दिलवाये, दिल को पात्र बना जाये -2
पूजन की किस्तम हो-3 हर कोई न पाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

जिसने दीपक जला लिया, उसने जीवन खिला लिया -2
खुद को प्रभु से मिला लिया -ऽऽऽ
उसे न कोई अब भय है, मिट जाये जो संशय है -2
वो ही जीवन को हो-3 खुद धन्य बनाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

पैसा कुछ हो सकता है, सबकुछ नहिं हो सकता है -2
कुछ-कुछ तो हो सकता है -ऽऽऽ
सब कुछ है वो ज्ञान है, बहुत कुछ है वो ध्यान है -2
कुछ-कुछ वो धन है हो-3 कुछ वस्तु बतायें रे -ऽऽऽ
जीवन ....

गुरु निंदा मुख लायेगा, वो जिंदा मर जायेगा -2
कभी नहीं उठ पाएगा -ऽऽऽ
निंदा वो इंसान करे, जो खुद में अभिमान धरे -2
गुरु का आशीष हो-3 भव पार लगाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

निंदा पर की करता है, वो जिंदा ही मरता है -2
गम ही गम में मरता है -ऽऽऽ
निंदा खुद की करो यहाँ, सुख अंतस् का वरो यहाँ -2
खुद की निंदा में हो-3 खुद, खुदा दिखाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

123

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

करता जो गुरु निंदा है, वो इंसा कब जिंदा है -2
हमको लगता मुर्दा है -ऽऽऽ
जिसका मन ही गंदा है, मानी है भिखमंगा है -2
गुरु निंदा से बढ़कर हो-3 नहिं पाप दिखाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

धरा-धरा पर सारा धन, धन में धरा तुम्हारा मन -2
धन पाकर नहिं खुश चेतन -ऽऽऽ
धन के हैं आयाम निरे, दुख-भय-चिंता-काम अरे -2
धर्मी इस धन से हो-3 नहिं लगन लगाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

गीत प्रभु के गायेगा, जीवन में रस पायेगा -2
आनन्दित हो जायेगा -ऽऽऽ
प्रभु गुण में आनन्द भरा, खा मीठा गुलकंद जरा -2
जीवन का रस ही हो-3 मीठा कर जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

धर्म दिले अपनाएगा, कर्म स्वयं मिट जायेगा -2
सुख अंजामे पायेगा -ऽऽऽ
न माने तो देख अभी, अपनाकर के धर्म कभी -2
धर्म से आँगन हो-3 रौशन हो जाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

स्वर्ग से सुन्दर अपना घर-जीवन जहाँ अनंत अमर -2
मुक्ति पथ का यहाँ सफर -ऽऽऽ
संयम वो अपनाते हैं, जो सत्संग बनाते हैं -2
गुरुवर ही दिल में हो-3 इक स्वर्ग बनाएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

मर्ज़ दवा को खाने में, संयम को अपनाने में -2
सर्दी में नहाने में -ऽऽऽ
पहले दुख फिर सुख मिलता, विषयों में उल्टा दिखता -2
करना वो कर लो हो-3 जो तुम्हें सुहाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

दुनियाँ एक झरोखा है, दिखता सच, वह धोखा है -2
लगता बड़ा अनोखा है -ऽऽऽ
इन्द्रजाल सा नज़राता, सत्य नज़र हमको आता -2
भ्रम की लहरों में हो-3 भ्रम बढ़ता जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जिसमें मुक्ति भाव बने, वो ही असली पुण्य कहे -2
सम्यग्दृष्टि उसे करे -ऽऽऽ
मिथ्यादृष्टि पुण्य करे, लेकिन उसमें स्वर्ग मिले -2
ये ही तो पुण्य हो-3 नकली कहलाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

जीव दया बिन धर्म विफल, नीर बिना सरवर असफल -2
ज्ञान बिना दिल है, निष्फल -ऽऽऽ
छाया बिन तरु व्यर्थ यहाँ, चन्द्र बिना है रात यहाँ -2
वैसे ही जीवन हो-3 बिन धर्म बताएँ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

आओ सच्चा ज्ञान वरें, कोई नया विधान करें -2
जिन-गुरु का सम्मान करें -ऽऽऽ
दिल में ये अरमान करें, हम अच्छे इंसान बनें -2
तब ही गुरु वाणी हो-3 अज्ञान मिटाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

संत संत मिल जाते हैं, नयन कमल खिल जाते हैं -2
नई राह दिखलाते हैं -ऽऽऽ
संत खजाना लाता है, तुम्हें बाँटकर जाता है -2
संतों के आगे हो-3 झोली फैलाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

निंदा दिल पर दाग है, क्रोध भाव का झाग है -2
दिले सुलगती आग है -ऽऽऽ
परनिंदा तो कचरा है, निंदक गाड़ी ढचरा है -2
आतम की निंदा हो-3 बेदाग बनाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

गर कषाय में राग है, ईर्ष्या बनती बाग है -2
निंदा उसकी आग है -ऽऽऽ
राग-द्वेष की झाग है, निंदक कब बे-दाग है -2
निंदा से प्राणी हो-3 दागी बन जाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

धन को यहाँ कमाते हैं, पूरा समय लगाते हैं -2
जीवन यहाँ गँवाते हैं -ऽऽऽ
फिर ये जीवन पाने को, पैसा सभी लगाते हैं -2
पैसा और जीवन हो-3 दोनों ही जायें रे -ऽऽऽ
जीवन ....

धर्म-कर्म को जानें हम, दिल से उसको मानें हम -2
खुद को ही पहिचानें हम -ऽऽऽ
जब तक इनका ज्ञान नहीं, तब तक सुख का भान नहीं -2
धर्मी बन करके हो-3 निज धर्म बढ़ाओ रे -ऽऽऽ
जीवन ....

घर पर संत बुलाता है, वह श्रावक कहलाता है -2
वही सभी कुछ पाता है -ऽऽऽ
उसका घर खुशहाल रहे, संस्कार के दीप जले -2
साधू आने से हो-3 खुशियाँ आ जायें रे -ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती साँस यहाँ कब रूक जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो-3 कब क्या घट जाये रे - ऽऽ

संस्कार बन जाते हैं, पत्थर से छाप जाते हैं -2
वे चारित्र बनाते हैं -ऽऽऽ
संस्कार शुभ नहीं हुए, तो फिर जीवन नहीं बने -2
धर्म जीवन में हो-3 सुख शांति दिलाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

अपना हम सम्मान करें, पहले प्रभु गुणगान करें -2
तब ही भोजन पान करें -ऽऽऽ
ऐसा तू कर जाएगा, कहीं नहीं दुख पायेगा -2
गुरु का आशीष हो-3 फिर हरदम पाये रे -ऽऽऽ
जीवन ....

अहंकार की अधोगति, जीवन की जो करे क्षति -2
कर देता है भ्रष्ट मति -ऽऽऽ
तू जिंदा मर जाएगा, अहंकार गर लाएगा -2
शक्ति स्मरण की हो-3 ये अहं घटाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

अहंकार गर लाएगा, ज्ञान कभी नहिं पाएगा -2
जीते जी मर जाएगा -ऽऽऽ
अहंकार विष पीता है, वो इंसां कब जीता है -2
इंसां हो मुर्दा हो-3 तो अकड़ दिखाए रे -ऽऽऽ
जीवन ....

123

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

वीतरागता प्यारी है - सबको ही हितकारी है - 2
जिसकी महिमा न्यारी है -ऽऽ
राग द्वेष निवारी है - गुणमय सुन्दर क्यारी है - 2
भव की भटकन को - हो - 3 सम्पूर्ण मिटाये रे - ऽऽ
जीवन ....

थोड़ा राग मिटा लें हम - दिल - ए चिराग जला लें हम - 2
जीवन धन्य बना लें हम-ऽऽ
ज्योतिर्मय को पा लें हम - प्रभु को हृदय बसा लें हम - 2
खुशियों का सावन हो - 3 घर में आ जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जी की जी में रह जाये - जी में जी नहिं रह पाये - 2
हरदम जी सा घबराये -ऽऽऽ
जी की जो ठुकराएगा - गम में वो फँस जायेगा
पाता वही जो हो - 3 जी की अपनाये रे - ऽऽ
जीवन ....

वही रिहाई पायेगा - जो रब का हो जायेगा - 2
रंजो गम तज जायेगा -ऽऽ
रहबर सच्चा मिला नहीं - रहजन से गम मिटा नहीं - 2
रूहानी ताकत हो हो - 3 निज रूह दिखाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

सच रुझान दिल लाओगे - नेक इंसान कहाओगे - 2
रहमत खूब लुटाओगे -ऽऽ
शस्तबाज - शासिख बन जा - तू प्रभु का आशिक बन जा - 2
आहत से राहत हो - 3 तू खुद पा जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

कतरा - कतरा गम - ए यहाँ - खतरा पग - पग उसे यहाँ - 2
सकरा दिल और गम - ए - जहां -ऽऽऽ
जीता है पर मरा यहाँ - मरा न तो अधमरा यहाँ - 2
दिल में सदाकत हो - 3 कैसे नजराए रे - ऽऽ
जीवन ....

सब पाना आसान है - कुदरत का वरदान है - 2
दिले खुदा ईमान है -ऽऽ
जो खुद से अंजान है - इंसां वो नादान है - 2
अपने को भूला हो - 3 वो भूसा पाये रे - ऽऽ
जीवन ....

फूल नहीं गर पाओगे - शूल दिले भर जाओगे - 2
कैसे बूँद बने सागर -ऽऽ
श्रद्धा जीवन प्राण है - मिथ्या विषमय वाण है - 2
श्रद्धा को लाकर हो - 3 भव धन्य बनाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

जीवन का उपयोग करो - विषयों का मत भोग करो - 2
जीवन ये अनमोल अरे -ऽऽ
गर उपयोग नहीं होगा - तो धन योग नहीं होगा - 2
धन मन को पाकर हो - 3 निज धर्म सजाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

कोरी कापी लाये हो - लिखने को तुम आये हो - 2
लिखो वही जो अच्छा हो -ऽऽ
जो भी तुम लख जाओगे - उसको ही लिख पाओगे - 2
लखना और लिखना हो - 3 जल्दी कर जाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

शूल हटाके फूल वरो - जीवन की सब भूल तजो - 2
दिल से प्रभु को रोज भजो -ऽऽ
महके महके रहो यहीं - बहके बहके रहो नहीं -2
चलती ये गाड़ी हो - 3 कब ठप्प हो जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

दुनियाँ एक तमाशा है - पाप - पुण्य का पासा है - 2
आशा और निराशा है -ऽऽऽ
जिसको जो भी भासा है - उसने वही तराशा है - 2
अपने अनुभव पर हो - 3 पग बढ़ता जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

पर को पाकर भूले हैं - भूल भूलकर झूले हैं - 2
भूले फिर भी फूले हैं -ऽऽ
अनुकूलों को सुख माना - प्रतिकूलों में दुख जाना - 2
कैसे जीवन की हो - 3 सच राह दिखाए रे - ऽऽ
जीवन ....

मिट्टी का हम बने दिया - मुझे खुदा ने खूब दिया - 2
मिला न जलता हमें दिया -ऽऽ
दिया न जलता पाएगा - दिया नहीं जल पाएगा - 2
दिल को देते ही हो - 3 दीपक जल जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

नाम राम का जपो सभी - दुक्ख न होंगे तुम्हें कभी - 2
कर ले ऐसा काम अभी -ऽऽ
जीना सीखो राम से - भक्ति को हनुमान से - 2
दुनियां में आके - गम नहीं खाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

सूरत अपनी दिखी नहीं - मूरत अपनी मिली नहीं - 2
गम ही गम में रहे यहीं -ऽऽऽ
अब ऐसा कुछ काम करें जिससे कुछ अंजाम वरें - 2
अपने दर्पण में हो - 3 क्यूँ धूल लगाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

भाव बना ले आज तुम - करवायेंगे विधान हम - 2
नहीं भरोसा जीवन का -ऽऽ
कल को किसने देखा है - आज हि कर ले मौका है - 2
मौका जीवन में हो - 3 फिर नहिं मिल पाए रे - ऽऽ
जीवन ....

संकट में नहिं घबराओ - ताकत अपनी अजमाओ - 2
धर्म आचरण को लाओ -ऽऽऽ
साथ न कोई देता है - नाव स्वयं तू खेता है - 2
दुनियाँ से सुख की हो - 3 मत आश लगाए रे - ऽऽ
जीवन ....

कर ले जो कुछ करना है - आज नहीं कल मरना है - 2
कल का नहीं भरोसा कर-ऽऽ
कर्म सही जो करते हैं - धर्म सही वो वरते हैं - 2
मानवता पाकर हो - 3 तुम फर्ज निभाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

बुरा किसी का मत सोचो - पहले अच्छाई खोजो - 2
खोजोगे वह पाओगे -ऽऽ
ढूँढ़ें ढूँढ़ें प्रभु मिलें - हृदय खिले दो नयन खिलें - 2
जैसा कर लोगे हो - 3 वैसा ही पाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

देकर जितना जाओगे - उतना ही ले पाओगे - 2
देने से ही लेना है -ऽऽऽ
जैसा यहाँ लुटाओगे - वैसा घर में पाओगे - 2
पीतल के बदले हो - 3 नहिं सोंना आये - ऽऽ
जीवन ....

किस्मत का जो खेल है - वही जिन्दगी जेल है - 2
भाव ज्ञानमय तेल है-ऽऽ
जो पुरुषार्थ रचाओगे - संस्कार वह पाओगे - 2
वरना ये जीवन हो - 3 कैदी बन जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

दुक्खों से मत घबराओ - शक्ति हाथों में लाओ - 2
तब ही सुन्दर जीवन हो -ऽऽऽ
सबसे मिलकर प्रेम करो, धर्म वरो नहिं द्वेष करो - 2
नैया खुद भव से हो - 3 तुम पार लगाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

भूख न मन की मिट पायी - इच्छा-आशा भरमायी - 2
संतोषी मन कैसे हो ? -ऽऽ
पाक न दिल ये बन पाया - पर को पाने भरमाया - 2
कैसे जीवन में - हो - 3 सुख शांति समाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

मानो, माया तजो अभी - प्रभु की छाया वरो अभी - 2
माया - मायावी जग में -ऽऽ
इसमें जो फँस जायेगा - वह जग में मिट जायेगा-2
माया का मोह हो - 3 भव भ्रमण कराये रे - ऽऽ
जीवन ....

सत्य नहीं दिख पाया है -डबरे में भरमाया है - 2
मिथ्या चारित छाया है -ऽऽ
दरिया बन जो जिये नहीं - सागर में वो मिले नहीं - 2
गम के डबरे में - हो - 3 क्यूँ रूह डुबाए रे - ऽऽ
जीवन ....

त्याग नहीं कर पाओगे - धर्म नहीं वर पाओगे - 2
मंगल दिले न पाओगे -ऽऽऽ
खुशी - खुशी तज जाओगे- कई गुना तुम पाओगे - 2
लोभी को जग में हो - 3 कुछ नहिं मिल पाये रे - ऽऽ
जीवन ....

क्षमा धर्म अति प्यारा है - सबको पुण्य सहारा है - 2
यही ज्ञान फब्बारा है -ऽऽ
क्षमा भाव धर जाओ तुम - भव के पाप हटाओ तुम - 2
ऐसे भावों में - हो - 3 गुण धर्म समाये रे - ऽऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

आज न छोड़े कल पर तुम - कलकल कल को समझो तुम
थोड़ी अकल लगाओ तुम -ऽऽ
कर ले आज प्रयास यहाँ - होगा दिले प्रकाश यहाँ - 2
आलस अपनाकर - हो - 3 क्यूँ समय गँवाए रे - ऽऽ
जीवन ....

सोने को जीवन भर है - जगने में ये पलभर है - 2
वक्त समझना तिलभर है -ऽऽऽ
अभी बहुत दिन जीना है - ऐसा लगता अक्सर है - 2
छोड़े ये भूलें - हो - 3 कुछ ज्ञान जगाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

पर से कर्म उपजता है - निज से मर्म निकलता है
स्व-पर दीप जब जलता है-ऽऽ
पर में परम न मिलता है - पर में हृदय न खिलता है - 2
पर से पर्दा कर - हो - 3 पर दूर हटाओ रे - ऽऽऽ
जीवन ....

पर को पर नहिं माना है - पर में ही बेगाना है - 2
परम - परम पर जाना है -ऽऽ
पर का ज्ञान पुराना है - अब निज को अपनाना है - 2
परखो अब पर को - हो -3 पर तज, निज पाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

तम को लेकर आये हैं - तम में ही भरमाए हैं - 2
तम को गले लगाए हैं -ऽऽऽ
तमसो ज्योतिर्गमयः हम - तब हो दूर हृदय से तम - 2
तम के बादल में - हो - 3 नहिं ज्योति दिखाए रे - ऽऽ
जीवन ....

गम में गम नहिं किया यहाँ - गम ही गम में जिया यहाँ
गम को गम नहिं कहा यहाँ-ऽऽ
गम ये गम नहिं गम जाना - गम को ही हमदम माना - 2
गम को जाने बिन - हो - 3 गम गमन न पाये रे - ऽऽ
जीवन ....

दुख को दुख नहिं जाना है - दुख में ही दीवाना है - 2
दुख को ही सुख माना है -ऽऽ
दुःख ही जीस्त तराना है - निज सुख से अंजाना है - ऽऽ
दुःख को जाने बिन हो - 3 नहिं सुख मिल पाये रे - ऽऽ
जीवन ....

आना जाना लगा यहाँ - खाना पीना लगा यहाँ - 2
और कमाना लगा यहाँ -ऽऽ
इनसे ये तन चलता है - जीवन कभी न खिलता है - 2
खुद में रहने की - हो - 3 अब ललक जगाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

इन्द्रधनुष सा तन - धन है - मिटता जाता क्षण - क्षण है - 2
बिजली जैसा यौवन है -ऽऽ
इस पर करे गुमान यहाँ - क्यों बनता नादान यहाँ - 2
तपकर तू तन से - हो - 3 भगवन बन जाये रे
जीवन ....

हो मिठास गर वाणी में, प्रीति बढ़े हर प्राणी में - 2
यही कहा जिनवाणी में -ऽऽ
हो उमंग जिंदगानी में - अमृत घुले कहानी में
वाणी व्यक्ति का - हो - 3 व्यक्तित्व बताए रे ऽऽ
जीवन ....

चंद दिनों का जीवन है - इसमें देखो सुख कम है - 2
गम ही गम नज़राता है -ऽऽऽ
जन्म सभी को है मालूम - मृत्यु किसी को नहिं मालुम - 2
जाने कब पंछी हो - 3 तन से उड़ जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

'ख' से बनता सुक्ख यहाँ - 'ख' से बनता दुक्ख यहाँ - 2
'ख' से बनता खार यहाँ ऽऽ
'ख' कहता अनुकूल यहाँ - 'ख' कहता प्रतिकूल यहाँ-2
उसको गुण अपने - हो - 3 नहिं कभी दिखाए रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

शुद्ध - अशुद्ध करे ये तन - नश्वर कहते हैं ऋषिजन - 2
तन से दीन बनें क्यों हम -ऽऽ
नश्वर नाश करे नहिं गम - नश्वर नाश करे जीवन - 2
तन धन की सेवा हो - 3 ऋषि व्यर्थ बतायें रे - ऽऽ
जीवन ....

जो खुद का उपकार करे - वह तन का अपकार करे - 2
बात धरम की जान अरे -ऽऽ
तन का जो उपकार करे - वह खुद का अपकार करे - 2
सेवा हो जिसकी हो - 3 उसका गुण आये रे - ऽऽ
जीवन ....

राग - द्वेष से बँधता है - समता से भव तजता है - 2
चेतनता ही समता है -ऽऽऽ
चेतनता में यत्न करें - सम्यग्दर्शन-ज्ञान वरें - 2
तब ही मंजिल का हो - 3 रस्ता दिख पाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जब जब हो संयोग यहाँ - तब तब गम के योग यहाँ - 2
रोग - शोक विषभोग यहाँ -ऽऽ
तीन योग से छोड़ो तुम - इनसे मुख को मोड़ो तुम - 2
तब ही मज़हब का हो - 3 शुभ मर्म समाए रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

तू सागर तो लहर हूँ मैं - तेरी ही इक नजर हूँ मैं - 2
तेरे बिन पत्थर हूँ मैं -ऽऽ
तेरा ही इक असर हूँ मैं - तेरा ही इक सफर हूँ मैं - 2
तेरी सज्दा ही हो - 3 शुभ राह बनाये रे - ऽऽ
जीवन ....

आयुबंध नहिं जाना है - कर्मबंध अंजाना है - 2
तन में ही दीवाना है -ऽऽऽ
सच्चा दिल में ज्ञान वरो - खुद की ही पहिचान करो - 2
वरना जीवन में हो - 3 दुख बढ़ता जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

पुण्य कर्म अनुबंध करें - पाप कर्म नहिं बंध करें - 2
तब ही आयुबंध करें - ऽऽ
जब जब जीवन जानोगे - तब प्रभु की सही मानोगे - 2
खुद को जाने बिन हो - 3 नहिं सत्य दिखाये रे - ऽऽ
जीवन ....

तेल ज्ञान का लाना है - दिल - ए चिराग जलाना है - 2
रौशनमय हो जाना है - ऽऽ
ठोकर अब नहिं खाना है - मंजिल अपनी पाना है - 2
मंजिल पर जाकर हो - 3 विश्राम दिखाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

जो नहिं फर्ज़ निभाता है - वह ही कर्ज़ बढ़ाता है - 2
अपनी तर्ज़ डुबाता है - ऽऽऽ
अपना मर्ज़ भूलता है - अघ में वही फूलता है - 2
फर्ज़ी हो फर्ज़ हो - 3 तो तर्ज़ न पाये रे - ऽऽ
जीवन ....

मन के हारे हार है - मन के जीते पार है - 2
मन दिखलाता सार है -ऽऽ
मन का सब व्यापार है - मन फूलों का हार है - 2
मन की मानें तो हो - 3 मन शांति न पाये रे - ऽऽ
जीवन ....

दिल गर बिल बन जायेगा - दरियादिली न पाएगा - 2
इक दीवार बनाएगा -ऽऽ
डूबा और डुबाएगा - मति भ्रष्ट कर जाएगा - 2
मेंढक कुँए का हो - 3 नहिं सागर पाए रे - ऽऽ
जीवन ....

ध्यान में रोता है दुखड़ा - मिलता पत्थर का टुकड़ा - 2
अथवा मिलता है रोकड़ा - ऽऽ
दूजे ध्यान में प्रभु मिलते - जिससे अंग - अंग खिलते - 2
होगा विवेकी - हो - 3 चिंतामणि पाये रे ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

जिसका हो संयोग यहाँ - गंदा हो उपयोग यहाँ - 2
रहे अपावन योग यहाँ -ऽऽ
उस पर तन गर चाहें हम - मूर्ख कहे ही जायें हम - 2
तन धन की पूजा हो - 3 सब व्यर्थ बताए रे - ऽऽ
जीवन ....

राग - द्वेष जब करता है - तब कर्मों से बंधता है - 2
समता निर्बन्धनता है -ऽऽ
पर में मस्ती लायेगा - निज हस्ती खो जायेगा - 2
कर्मों की सरिता हो - 3 में खूब नहाए रे - ऽऽ
जीवन ....

कर्म - कर्म का हितकारी - जीव -जीव का हितकारी - 2
नहिं जाने दुनियाँ सारी -ऽऽऽ
कौन न अपना हित चाहे - अपना - अपना अवगाहे - 2
चेतन सुन तू भी हो - 3 अपना हित चाहो रे - ऽऽ
जीवन ....

भोगी मस्त दुकान में - योगी अपने ध्यान में - 2
ज्ञानी धर्मी ज्ञान में -ऽऽ
भोगी रोकर जाता है, धर्मी हंसता जाता है - 2
दोनों में इतना हो - 3 ही फर्क दिखाए रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

अपने में जो डूबा है - वो दुनियाँ से ऊबा है - 2
दुनियाँ उसे अजूबा है -ऽऽऽ
देखे पर न देखता है - बोले - पर न बोलता है - 2
चलने पर भी वह हो - 3 ठहरा - नजराए रे - ऽऽ
जीवन ....

जीव जहाँ पर रहता है - प्रीति वहीं पर करता है - 2
उसी जगह पर रमता है -ऽऽऽ
फिर वह कहीं न जाता है वहीं उसे फिर भाता है - 2
चाहे वह कीड़ा हो - 3 मल का बन जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

तन को खूब खिलाता है - धोकर उसे सुलाता है - 2
सेवा खूब रचाता है -ऽऽ
जनम जनम तन साथ रहे - साथ न छूटे ऋषि कहें - 2
ऐसे प्राणी का हो - 3 तन साथ निभाये रे - ऽऽ
जीवन ....

अंतरात्मा - बहिरात्मा - और कहीं है परमात्मा - 2
तीन तरह की है आत्मा -ऽऽ
बहिरात्मा को त्याग करें - अंतरात्मा प्राप्त करें - 2
परमात्मा पाकर हो - 3 भव सफल बनाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

बाहर भटके बहिरात्मा - अंदर घूमे अंतरात्मा - 2
खुद में डूबे परमात्मा -ऽऽऽ
बाहर के अब ख्वाब तजो - अंतर्दीप प्रकाश करो - 2
भव में ये नैया हो - 3 अब पार लगाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

राग - द्वेष की चिन्गारी - कर्मों की है फुलवारी - 2
खत्म करे गुण की क्यारी -ऽऽ
मजहब की महिमा न्यारी - हर इंसां को सुखकारी - 2
खुशियों की आहट हो - 3 गम - खुशी बनाये रे - ऽऽ
जीवन ....

मन नहिं धर्म लगाता है - उसको कर्म सताता है - 2
दोजख राह दिखाता है -ऽऽ
मजहब खुशियाँ लाता है - मंजिल राह बताता है - 2
दिल के गुलशन को हो - 3 तुम खुद महकाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

खुद की नहीं तलाश यहाँ - तो हम जिंदा लाश यहाँ - 2
ऐसा हो अहसास यहाँ -ऽऽऽ
मजहब की हो प्यास यहाँ - हरदम रहे प्रयास यहाँ- 2
तब ही जीवन का हो - 3 निजसार दिखाए रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

दर्दे दिली दवा क्या है ? पूछो दिले हुआ क्या है ? - 2
दिल से कहो खुदा क्या है? -ऽऽ
जीने का मुद्दा क्या है? रहता यहाँ सदा क्या है ? - 2
ऐसे सवाल हो - 3 खुद ज्ञान बढ़ाए रे - ऽऽ
जीवन ....

किस्मत को अजमायेंगे - खुश किरदार बनाएंगे - 2
दिले चिराग जलायेंगे -ऽऽ
साहिल है नजदीक तेरे - हो पांवों में सफर तेरे - 2
चलने से मंजिल हो - 3 भी पास आ जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जब किरदार निभाएगा - आंधी तूफां आएगा - 2
जमींदोज करवाएगा -ऽऽऽ
अगर न तू घबराएगा - तो हर चीज को पाएगा - 2
जलवा क्यूँ अपना हो -3 तू जहां छिपाए रे - ऽऽ
जीवन ....

कोई पाकर खोता है - कोई खोकर पाता है - 2
होना है सो होता है -ऽऽऽ
सब किश्मत का खेल है - कर्म प्रकृति का मेल है - 2
अपना ही कर्म हो - 3 हर राह बनाए रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

पुण्य फलों में फूलो मत - ईश्वर- गुरु को भूलो मत - 2
पाप कर्म में झूलो मत -ऽऽ
इतराना मिट जाना है - झुकने में गुण पाना है - 2
कर्मों की किश्ती हो - 3 नहिं पार कराये रे - ऽऽ
जीवन ....

करना है वो आज करो - कल पर मत विश्वास करो - 2
आज करो वो अभी करो - ऽऽऽ
कल को किसने देखा है - पल का नहीं भरोसा है - 2
कल - कल करके तू हो - 3 क्यों अकल गँवाए रे - ऽऽ
जीवन ....

घड़ी घड़ी देखें घड़ी - फिर भी समझे नहीं घड़ी - 2
गई न आये कभी घड़ी ऽऽ
घड़ी बदलती हर घड़ी - रहे न निश्चित कभी घड़ी - 2
रुककर हम रोकें हो -3 पर रुक नहिं पाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जितनी हमको मिलीं घड़ी - उतनी चलती जीस्त घड़ी - 2
व्यर्थ करो नहिं कोइ घड़ी -ऽऽ
सही घड़ी जब आयेगी - घड़ी सही दिख जायेगी - 2
अपनी घड़ी में हो - 3 नहिं समय दिखाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

आने की थी एक घड़ी - जाने की है एक घड़ी - 2
मरे आदमी घड़ी घड़ी -ऽऽऽ
जान न पाया सही घड़ी - कैसी कैसी दिखी घड़ी - 2
हर पल घड़ी में हो - 3 हर पल नजराये रे - ऽऽ
जीवन ....

समय निकलता जाता है - जीवन ढलता जाता है - 2
पता नहीं चल पाता है -ऽऽ
सुबह हुआ और शाम ढली - बची जिंदगी चला चली - 2
दल दल में रहकर हो - 3 क्यूँ धर्म दबाए रे - ऽऽ
जीवन ....

नही यहाँ रह पाओगे - आये हो तो जाओगे - 2
भव की रीति निभाओगे -ऽऽ
नदिया बहती जाती है - सागर में मिल जाती है - 2
पानी रुक जाये हो - 3 तो खुद सड़ जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

पुण्य फलों की माया है - जिसमें तू भरमाया है - 2
मानव गति चौराहा है -ऽऽऽ
विषय न अंतस् भाव है - मंजिल न, ये पड़ाव है - 2
पत्थर की कश्ती हो - 3 क्या नहीं डुबोये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

धरम न दिल में लाएगा - रहम न दिल में पायेगा - 2
हरदम गम उपजाएगा-ऽऽ
अपने उर को पावन कर - जीवन को तू सावन कर - 2
गम के भावों में हो - 3 गम ही गम पाये रे - ऽऽ
जीवन ....

मन मंदिर ये मैला है - जीवन चलता ठेला है - 2
गम ही गम की बेला है -ऽऽ
दिल पापों का थैला है - मन से बना करेला है - 2
हम ही कड़वे तो हो - 3 सब कड़वा पाये रे-ऽऽ
जीवन ....

दिल में उपजे होश यहाँ - तब होगा संतोष यहाँ - 2
जोश नहीं है रोष वहां -ऽऽऽ
गम ही गम का कोश वहाँ - हो जाता बे-होश यहाँ - 2
जागें दुनियाँ में हो - 3 तो जग मिट जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

किया न गम पर कभी गिला - गम का हरदम चला सिला - 2
खुशियों का नहिं सफर मिला -ऽऽ
गुल सा दिल को अभी खिला - दिल को दिल का भाव दिला - 2
ऐसी कला ही - हो - 3 कालुष्य मिटाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

पर पर परिणति बैठी है - फिर भी इतनी ऐंठी है - 2
लगती बात अनूठी है -ऽऽ
अपने को हम भूले हैं - पर को पाकर फूले हैं - 2
खुद को अब समझो - हो - 3 तब समझ दिखाए रे - ऽऽ
जीवन ....

पूनम की हो रात अगर - दिख जायेगी तुम्हें डगर - 2
नजराएगा सही सफर -ऽऽऽ
अंधकार गर लाएगा - कई ठोकरें खाएगा - 2
अपनी करनी पर - हो - 3 तू खुद पछताए रे - ऽऽ
जीवन ....

अंतस् तू चेतनमय है - बाहर से पुद्गल मय है - 2
मय पीकर दोनों मय है -ऽऽ
होना है गर अजर अमर, तो खुद जानो समय सफर - 2
अंतस् आतम ये हो - 3 चिन्मय नजराये रे - ऽऽ
जीवन ....

विषय भोग की प्याली में - राग द्वेष की नाली में - 2
कीड़ों से हम नजराये -ऽऽ
क्रीड़ा खुद में कर चेतन - भटक न कीड़ा बन वन - वन - 2
विषयों में फँसकर - हो - 3 क्यूँ विष उपजाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

दिल को क्यूँ दे रहा दगा - दिल ही तेरा सही सगा - 2
दिल से तू अब भगा -दगा -ऽऽऽ
दिल की दिल में ज्योति जगा - खुद को पाये जगा जगा - 2
जग में जगने की - हो - 3 अब जंग जगाओ रे - ऽऽ
जीवन ....

कर्म उदय में आता है - दुःख -सुखों को लाता है - 2
राग द्वेष बनाता है -ऽऽ
ज्ञान करें पुरुषार्थ करें - समता के हम भाव धरें - 2
तब ही ये कर्म - हो - 3 जाये नहिं आये रे - ऽऽ
जीवन ....

जगत सत्य पहिचाने ना - बात गुरु की माने ना- 2
गिरेबान खुद झांके ना -ऽऽ
पर निंदा रस भजते हैं - खुद को सही समझते हैं - 2
तेरी यह चर्या हो - 3 तुझको नरक दिखाये रे - ऽऽ
जीवन ....

नर का नरम नरम दिल हो - उसको जनम ये साहिल हो - 2
करम मरम से निर्मल हो -ऽऽऽ
न रम - न रम के भाव करो कदम कदम पर भरम तजो - 2
भ्रम से जीवन में - हो -2 फिर कर्म समाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

लड़ते हैं भाई - भाई हो देवर या भौजाई - 2
उन्हें नरक गति दुखदाई -ऽऽ
कुत्तो जैसे लड़ते हैं - हरदम यहाँ झगड़ते हैं
उनके जीवन में हो - 3 नहिं शांति समाए रे - ऽऽ
जीवन ....

हम निगोद से आये हैं - चारों गति भरमाये हैं - 2
मुश्किल नर तन पाये हैं -ऽऽ
अब सम्यक्त्व सजाना है - नरभव सफल बनाना है - 2
वरना ये नरतन हो - 3 फिर नहिं मिल पाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जिसको समझा यहाँ मजा - वह है तेरी एक सजा - 2
भूला है तू यहाँ कजा -ऽऽऽ
अच्छी कर ले यहाँ रजा - खुद को तू मत जहाँ लजा
सच्चा सुख भूला हो - 3 गम सुख बतलाए रे - ऽऽ
जीवन ....

गुण की दिले उमंग करो - गुरुओं का सत्संग करो - 2
पैदा नई तरंग करो -ऽऽ
अरमानों का रंग भरो - मोक्षमार्ग पर जंग करो - 2
साहिल पर नैया - हो - 3 क्यूँ आप डूबोये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

अंतस् गुण का बाना है - भीतर रूप सुहाना है -2
इक सम्यक्त्व निशाना है -ऽऽ
तुझको गर सुख पाना है - तो सब कर्म नशाना है -2
कर्मों के नशते हो - 3 अपना मिल जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

हाथों से नहिं दान दिया - नहीं वेद का ज्ञान किया - 2
हरदम धन पर ध्यान दिया -ऽऽऽ
गुरुसेवा में नहीं गया - तीरथ करना भूल गया - 2
ऐसे नर - नारी - हो - 3 अति निंद बताये रे - ऽ
जीवन ....

सफर पाँव में लाना है - डगर मोक्ष की पाना है - 2
मुक्ति नगर उपजाना है ऽऽ
करले अपना साफ जिगर - पाना है गर ज्ञान अगर - 2
दिल में गर पाप - हो - 3 नहिं साफ दिखाए रे - ऽऽ
जीवन ....

बुरा वक्त जब आयेगा - कोइ न साथ निभाएगा - 2
समझ तभी सब आएगा -ऽऽ
गर तू पुण्य कमाएगा - बदल बुरा सब जायेगा - 2
अपने समय पर - हो -3 सब काम सुहाये रे - ऽऽ
जीवन ....

जीवन चलती रेल यहाँ चलती जाये रे ऽऽ
सिगनल गिरते ही हो-3 छुक-छुक रुक जाये रे ऽऽ

चाह से बनती राह यहाँ - कौन बताए राह यहाँ - 2
आह बनाये चाह यहाँ- ऽऽऽ
खुद की कर परवाह यहाँ - दूर करो सब डाह यहाँ - 2
विषयों की चाहत हो -3 भव राह डुबोये रे -ऽऽ
जीवन ....

कर पालन कर्तव्यों का - काम समझ ये भव्यों का-2
समझो नहीं अभव्यों का -ऽऽऽ
इनसे ही अघक्षालन हो - खुद का ही संचालन हो-2
ये ही कर्तव्य हो - 3 सद् ज्ञान बढ़ाए रे - ऽऽ
जीवन ....

बुद्धि - विवेक नहीं मन में - क्या पाएगा जीवन में - 2
रहे भटकता भव वन में -ऽऽ
बिन विवेक उल्लास कहाँ - खुद पर ही विश्वास कहाँ - 2
बुद्धि विवेक हो - 3 श्रद्धान बनाए रे - ऽऽ
जीवन ....

जोड़ोगे, जुड़ जाओगे, छोड़ोगे, निज पाओगे - 2
तोड़ोगे, मिट जाओगे -ऽऽ
जोड़ तोड़ में माया है - माया काली छाया है - 2
छोड़ो पर छोड़ो हो - 3 अपना मिल जाये रे - ऽऽ
जीवन ....

गर मशाल है हाथों में – वो विशाल है भावों में – 2
इक मिशाल भव कानन में – ऽऽ
दिल को नहीं हलाल करो – पैदा नया जमाल करो
अपना तब हाल – हो – 3 खुशहाल हो जाये रे –ऽऽ
जीवन ....

पाप–पुण्य का खेल यहाँ–दोनों भव की रेल यहाँ – 2
नहीं बना तू जेल यहाँ– ऽऽ
ऐसा खेलो खेल यहाँ – मिट जाये भव जेल यहाँ– 2
भव में क्या रमना– हो – 3 निज में रम जाओ रे – ऽऽ
जीवन ....